ISSN : 2456-8856

पंजीयन संख्या RNI No.: MPHIN/2002/09510 डाक पंजीकृत क्रमांक मालवा डिवीजन/204/2024-2026 उज्जैन (म.प्र.)

UGC Care Listed and Peer Reviewed Referred Bilingual Monthly International Research Journal

प्रेषण दिनांक 30 पृष्ठ संख्या 28

आश्वस्त

वर्ष 26, अंक 250 अगस्त 2024

संपादक – डॉ. तारा परमार

भारती दलित साहित्य अकादमी मध्यप्रदेश, उज्जैन की अन्तर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका

आश्वस्त

वर्ष : 26 अंक 250
अगस्त 2024

आश्वस्त

(सन् 1983 से निरंतर प्रकाशित)

RNI No.: MPHIN/2002/09510
ISSN : 2456-8856

भारती दलित साहित्य अकादमी मध्यप्रदेश, उज्जैन (पंजीयन क्रमांक 2327 दिनांक 13/05/1999) की मासिक पत्रिका

संस्थापक सम्पादक
डॉ. पुरुषोत्तम सत्यप्रेमी

संरक्षक
सेवाराम खाण्डेगर
11/3, अलखनन्दा नगर, बिड़ला हॉस्पिटल के पीछे,
उज्जैन मो.: 98269-37400

परामर्श
आयु. सूरज डामोर IAS
पूर्व सचिव-लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण वि.
म.प्र.शासन, भोपाल मो. 094253-16830

सम्पादक
डॉ. तारा परमार
9-बी, इन्द्रपुरी, सेठी नगर, उज्जैन-456010
मो. 94248-92775

सम्पादक मण्डल :
डॉ. जयप्रकाश कर्दम, दिल्ली
डॉ. खन्नाप्रसाद अमीन, गुजरात
डॉ. जसवंत भाई पण्ड्या, गुजरात
डॉ. शैलेन्द्र कुमार शर्मा, म.प्र.

Peer Review Committee
डॉ. श्रवणकुमार मेघ, जोधपुर(राजस्थान)
प्रो. दत्तात्रय मुरुमकर, मुंबई (महाराष्ट्र)
प्रो. रश्मि श्रीवास्तव, उज्जैन (म.प्र.)
डॉ.बी.ए.सावंत, सांगली (महाराष्ट्र)

कानूनी सलाहकार
श्री खालीक मन्सूरी एडव्होकेट, उज्जैन

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ
1	अपनी बात	डॉ. तारा परमार	3
2	The School Climate : A Neglected Aspect of Teaching - Learning in Government's School	Tasneem Ahmad (Research scholar)	4
3	माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के आत्म सम्प्रत्यय एवं शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में एक अध्ययन	डॉ. राजकुमारी गोला सहायक प्रोफेसर कु. मोनिका शोधार्थिनी	8
4	मिडिल स्टेल पर अध्ययनरत सामान्य एवं विकलांग विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन का अध्ययन	डॉ. राजकुमारी गोला सहायक प्रोफेसर उमरा इदरीस शोध छात्रा	11
5	जंगें आज़ादी में उर्दू कलमकारों का हिस्सा	डॉ. मो. अज़हर ढ़ेरीवाला	14
6	दलित उत्पीड़न और धर्मांतरण का सटीक आख्यान है : दिल्ली की गद्दी पर खुसरो भंगी	विवेक कुमार	16
7	दलित कविता : सामाजिक न्याय और अधिकार की पुकार	डॉ. श्यौराजसिंह बेचैन सीनियर प्रो. हिन्दी विभाग, डी.यू.	18
8	स्वाधीनता आंदोलन और खड़ी बोली हिन्दी का साहित्य	देवचंद्र भारती शोधार्थी डॉ. दुर्गेश कुमार राय शोध निदेशक	21
9	दिव्यांगजनों के लिए ई-सेवाओं की उपयोगिता	डॉ. संतोष पाटीदार	24
10	हम लड़ रहे हैं (कविता)	डॉ. खन्ना प्रसाद अमीन	26

UGC Care Listed Journal

खाते का नाम - आश्वस्त (Ashwast)
खाते का नं.- 63040357829
बैंक - भारतीय स्टेट बैंक,
शाखा- फ्रीगंज, उज्जैन (Freeganj, Ujjain)
IFS Code - SBIN0030108

Web : www.aashwastujjain.com
E-mail : aashwastbdsamp@gmail.com

एक प्रति का मूल्य	:	रुपये 20/-
वार्षिक सदस्यता शुल्क	:	रुपये 200/-
आजीवन सदस्यता शुल्क	:	रुपये 2,000/-
संरक्षक सदस्यता शुल्क	:	रुपये 20,000/-

विशेष : सम्पादन, प्रकाशन एवं प्रबंध अवैतनिक तथा पत्रिका में प्रकाशित विचारों से सम्पादक-मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है। विवाद की स्थिति में न्यायालय क्षेत्र उज्जैन रहेंगा।

अपनी बात

हमारे देश का स्वतंत्रता संग्राम अद्वितीय और अनुपम रहा है। विश्व के इतिहास में यह बेजोड़ उदाहरण है। इस स्वाधीनता आंदोलन के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य पर दृष्टि डालें तो पाते हैं कि इस आंदोलन में असत्य के विरुद्ध सत्य को, हिंसा के विरुद्ध अहिंसा को, क्रोध के विरुद्ध क्षमाशीलता को, माया के विरुद्ध निष्कपटता को और लोभ के विरुद्ध त्याग व बलिदान को संघर्ष करते हुए हम देखते हैं। ''सत्य मेव जयते'' के इस आंदोलन में देशवासियों ने स्वप्रेरणा से अपनी–अपनी सामर्थ्य से तन–मन और धन से अप्रतिम योगदान दिया। सारा राष्ट्र एक ध्वज के नीचे एक नेता के मार्गदर्शन में पूर्ण अनुशासन का पालन करते हुए निर्भीक और निडर होकर अपना सर्वस्व बलिदान करने के लिये कटिबद्ध होकर कदम से कदम और कंधे से कंधा मिलाकर आजादी के रास्ते पर चल पड़ा।

देश के जननायकों, सेनानियों, शहीदों एवं सैंकड़ों रण बांकुरे जिनका नाम इतिहास में कहीं भी दर्ज नहीं है, के लहू के एक–एक कतरे से इस आजादी को प्राप्त किया है।

आज हम इन्हीं सब के बलिदान के कारण ही स्वतंत्र देश के स्वतंत्र नागरिक के रूप में सांस ले रहे हैं। विरासत में मिली इस आजादी को अक्षुण्य–अमर बनाये रखना प्रत्येक देशवासी का अहम कर्तव्य है।

आज से 77 वर्ष पूर्व 15 अगस्त 1947 को केवल एक अध्याय ही पूरा हुआ था। राजनीतिक स्वतंत्रता के अलावा सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक स्वतंत्रता प्राप्त करना शेष होने के कारण 15 अगस्त 1947 के बाद भी आंदोलन निरंतर चलता रहा और आज भी चल रहा है।

समता और ममता मूलक जिस सुगठित समाज व राष्ट्र की कल्पना स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों और संविधान निर्माताओं ने की थी वह आकाश कुसुम की तरह नजर आ रही है। उग्रवाद, आतंकवाद, अवसरवाद आदि का बोलबाला तो सत्य, अहिंसा, त्याग एवं बलिदान पर आधारित भारतीय संस्कृति को भोग पर आधारित असमानता और शोषण मूलक उपभोक्तावादी, पाश्चात्य संस्कृति, आर्थिक उदारीकरण एवं वैश्वीकरण के नाम पर प्रहार पर प्रहार करती जा रही है। पर्यावरण प्रदूषण, भ्रष्टाचार, राजनीतिक अखाड़ेबाजी और आदर्श विहीन राजनीतिक विचारधारा आदि के कारण संपूर्ण राष्ट्र त्रस्त, भयभीत और चिंतातुर है।

जिन्हें समाज, सत्ता, शासन से बहिष्कृत होना चाहिए ऐसे अपराधिक प्रवृत्ति वाले सत्ता के अभिन्न महत्वपूर्ण अंग बने हुए हैं। साम्प्रदायिकतावादी और कट्टरतावादी विघटनकारी शक्तियां धर्म के नाम पर अपनी मनमानी करने पर उतारू है। जिन मूल्यों की अवनति पराधीनता के कारण हुई थी, स्वाधीनता के बाद उनका रसातल में डूब जाना पीड़ादायक है।

स्वतंत्रता आंदोलन त्याग और बलिदान की भावना पर आधारित था, उस समय हिन्दुस्तान एक राष्ट्र हो गया था पर हमारा राज नहीं था, आज राज है पर राष्ट्रीयता की भावना पर खतरा मंडरा रहा है।

मूल्यों में तेजी से आ रही गिरावट ग्लोबल परिवेश के नाम पर संस्कृति का नाश, आचरण, व्यवहार तथा वैश्वीकरण कहीं हमारी भावी पीढ़ी को नष्ट न कर दे। यह अति विचारणीय मुद्दा है।

यदि हमारे नौजवान पथ से विचलित हैं तो इसका कारण यही समझ में आता है कि हम उनके सामने अपने सुकर्मों से कोई आदर्श प्रस्तुत नहीं कर सके। उन्हें हमने तथाकथित रूप से शिक्षित तो बना दिया पर उनके भविष्य को अंधकारमय ही रहने दिया। हमें उपदेशक बनने का नाटक छोड़ना होगा।

आवश्यकता है हर भारतीय के आत्म चेतना की जागृति की, शिक्षा की, अधिकार व उत्तरदायित्व के ज्ञान की एवं सदैव समाज–राष्ट्रहित, देश प्रेम के प्रति कर्तव्यों के निर्वाहन की चाहे वह शासक, सत्ताधारी या समाज की किसी भी कौम का व्यक्ति क्यों न हो। युवा शक्ति को नैतिकता के संस्कारों से संवारना होगा।

वन्दे मातरम्।

– डॉ. तारा परमार

The School Climate: A Neglected Aspect of Teaching - Learning in Government's Schools

- Tasneem Ahmad
(Research scholar)

Abstract :

School climate is a comprehensive concept that encompasses the availability, accessibility, acceptability and adaptability of school education facilities. In India, it is characterized with a continuing inadequate teaching staff, deteriorating standards and quality, poor physical facilities and public apathy. A systematic and sustained transformation in the school climate can improve the teaching --learning process and confidence of guardians in schools out comes. Government schools should be given support and guidance to make school climate more inviting and realistic in teaching- learning. Enrichment of quality and diversity in school should be the objectives of school climate. Good school climate produces early impression in the absorbent mind of student that motivates to stay in school. Bad school climate triggers fear and anxiety in learners and their parents and contribute to the dehumanization of learners. Present study points out the basic dimension of school climate and its effect on learners' academic outcomes and overall personality development.

Key words : School Climate, Teaching- Learning, Government School

Introduction :

Indian school education system has quality problem. Quality in schooling is not growing sustainably due to many reasons. The school climate is one among them. School education is characterized with continuing crisis with inadequate staffing; poor physical facilities and insufficient equipments. The consequence of this apathy adversely affects the quality, quantum, and equity in school education. In India, school education has been treated as a 'public good' and "public good is to be considered as a 'common good. The loss of public goods nature of school education is due to loss of quality of school climate. However, these pertinent questions have remained unanswered and ignored in regard to improve quality of school climate. Collectively; our civil society has a dim view on 'school climate' in government schools. Inappropriate school climate renders a disservice to teacher, employers, children, parents and

community.

School Climate :

School climate has gained the status of global construct. School Climate consists of the physical and psychological aspects of the school. These aspects are sensitive to change and are preconditions for teaching-learning process. Loosely school climate, consists the information of school environment, learning environment, feelings of community and academic and social climate. The climate would be the average characteristic of school concerned individuals, such as teacher's morale, staff stability, and students' family background. In the words of Ehman (1980), "school climate is the atmosphere or ambience of an organization as perceived by its members". Multicultural aspect of school is also the indispensable component of school climate. Hoy and Sabo (1998) said that the organizational climate emerges from the joint interactions of students, teachers, and administrators. School climate can be seen as school environment related to attitudinal dimension and trust - system of the school that effects children's cognitive, social and Psychological development. It is a social system of shared norm, expectation, and perception of the personality of the school. It is multi-dimensional construct that is rooted in various aspect of organization like mission and vision of school, work relations, ways of communication..

Necessity of School Climate :

Inequality in term of school climate is matter of concern. School is a place for holistic child development. Good school climate produces early impression in the absorbent minds of student that motivates him to stay in school. Teacher, through instructional strategies, evolve a classroom environment which keeps learners engaged in productive learning activities. School climate also include, a well-managed classroom, minimum distraction, space for movement, easy interaction with student. High quality teacher-student relationship help student to satisfy his need of social acceptance. Classroom climate is the psychological environment that facilitates safe feeling, give priority to learning, and ready to make mistake for maximum cognitive development. Such environments minimize discipline problems, academic failure and dropping out. This sense makes feel that learners have common goals, mutual respect and supportive to each other and also trust that every student play contributing role to

classroom learning.

How Is School Climate Distorted?

School climate has no substitute in educational parlance. It is joint venture of all participants of school system. NEP-2020 endorsed this spirit in the words "Each stakeholder and participant of the education system will be accountable to perform their role with the highest level of integrity, For full commitment, and exemplary work ethic" (Para, 8.6, p.31). When formalities of teaching dominate the classroom ambience, there are chances that classroom may be distorted. In such situation, Academic, social, and cultural interaction between teacher and students remain secondary activity. Student's activity is minimal and docility is the criteria of behavior. maintaining democratic school climate, there must be genuine co-operation in all stakeholders of school. Cooperation of school staff depends upon free discussion. Discussions achieve better communication of idea, relation and feeling between people. If child's feeling of significance does not grow, he could not feel responsible to learning. This condition turns students to misbehaviors of hyperactivity, impulsiveness, and inattentiveness in school activities.

How It Is Secured :

School climate is a critical component of school. There is little discussion to ameliorate the school climate in our society. Absence of discussion, on the school climate has revealed societal lukewarm attitude towards school education. Interaction and mutual relation among different stakeholder is the main aspect of it. The conscious community, responsible guardian, and dedicated school administration could play constructive role in achieving appropriate school climate. NGOs and social workers involved in educational field may also provide counseling and guidance in implementing the educational guidelines. School teacher is the axis of every activity of the school. His every movement, idea and action is the component of school climate. Freire indicate about the role of teacher in school in the words " the teacher is no longer merely the one-who- teaches, but one who is himself taught in dialogue with the students, who in turn while being taught also teach" (p,53).

Who Creates It?

School climate is multidimensional entity. It can't be achieved single handed. All stakeholders of school contribute for its establishment. The main responsibility of evolving school climate rests on

the shoulder of faculty members. Teacher is axis of all students' related activities and engagements in school and out of school. Joint efforts of school faculty, professional at community agencies, students' parents and caregivers could play crucial role in school climate. Teacher knows and understands the emotional, social, cultural, religious and economic condition of the individual students of classroom. The mutual understanding and respect between teacher and student facilitate the atmosphere for free discussion on personal and academic matters. Principal's guidance, working style and respect from teacher and students play constructive role in evolving the conducive school climate. It is an idea that could be perceived by students and parents, when school becomes safe encouraging, challenging and empowering to students.

Conclusion :

For marginalized families, quality education is the only hope to nurture the bright future. The educational inequity due to school climate has deprived the most vulnerable from the quality education. Bad school climate disrupts all levels of learning and widens socio-economic disparities. School climate has the worst impact on children who were already at an economic and cultural disadvantage. Showing lukewarm attitude to rejuvenate it, is the symptom of a deeper malady in Indian's school education system. It is not a matter of choice but a socio-moral obligation of a responsible society. One of the most rational argument for investment in the school climate is to achieve overall economic gains and an equitable society. For positive development of students, school climate should be established and maintained by all stakeholders of school. Inappropriate school climate inverts educational objectives, perverts teacher-student relationship and subvert the aims of school education system.

- Tasneem Ahmad (Research scholar)
Department of Education
Mobile: +91-9258514841

- Dr. Zulfiqar Ullah Siddiqui
(Assistant Professor)
Department of Psychology
University of Science & Technology
Meghalaya Mobile: +91-9368654380,

References :

Ehman, L. (1980). The American school in the political socialization process. Review of Educational Research, 50, 99-119.

Freire, P. (1993). Pedagogy of the Oppressed. Peguine Books.

MHRD. (2020). National Education Policy 2020. Ministry of Human Resource
Development.GOI

Hoy, W. K., & Sabo, D. J. (1998). Quality Middle School : Open and Healthy. Corwin Press Inc. MHRD. (2020). National Education Policy 2020.Ministry of Human Resource
Development. GOI.

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के आत्म समप्रत्यय एवं शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में एक अध्ययन

– **डॉ. राजकुमारी गोला** (सहायक प्रोफेसर)
– **कु. मोनिका** (शोधार्थिनी)

सार—मनुष्य के जन्म से लेकर मृत्यु तक विकास की अनेक अवस्थायें होती है। पूर्व शैशवावस्था, बाल्यवस्था, किशोरावस्था, युवावस्था, प्रौढावस्था तथा वृद्धावस्था। मानवविकास की विभिन्न अवस्थाओं में किशोरावस्था सर्वाधिक महत्वपूर्ण अवस्था है। विकासात्मक मनोवैज्ञानिकों ने किशोरावस्था को अधिक महत्वपूर्ण अवस्था बताया है इस अवस्था में किशोरों में महत्वपूर्ण शारीरिक विकास, सामाजिक विकास, संवेगात्मक विकास, मानसिक विकास तथा संज्ञानात्मक विकास होते है। यह वह अवस्था है जिसका छात्रों में तात्कालिक प्रभाव तथा दीर्घकालिन प्रभाव दोनों ही देखने को मिलता है। इस अवस्था में शारीरिक एवं मनोवैज्ञानिक दोनों तरह के प्रभाव बहुत स्पष्ट रूप से उभरकर आते है। इन्ही तथ्यों को दृष्टिगत करते हुए प्रस्तुत शोध पत्र में विद्यार्थियों के आत्म सम्प्रत्यय एवं उनकी शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन किया गया है सर्वेक्षण पद्धति के अन्तर्गत प्रतिदर्श विधि द्वारा 286 छात्र एवं छात्राओं का चयन किया गया है।

बीजक शब्द : आत्म सम्प्रत्यय, शैक्षिक उपलब्धि, संवेग, नैतिक एवं आध्यात्मिक।

प्रस्तावना : शिक्षा मानव जीवन के विकास की महत्वपूर्ण प्रक्रिया है, जो जन्म से लेकर जीवन पर्यन्त तक चलती रहती है। यह व्यक्ति और समाज दोनों के विकास में अपना योगदान देती है। शिक्षा का कार्य मानवीय जीवन को सुखमय, संपन्न और समृद्ध बनाना है, इसके लिये शिक्षा मानव का शारीरिक, बौद्धिक, सांवेगिक, आध्यात्मिक और नैतिक विकास करती है और उनकी आवश्यकताओं, आकांक्षाओं, मूल्यों और उद्देश्यों को प्राप्त करने में महत्वपूर्ण योगदान देती है। प्रत्येक बालक कुछ वंशानुगत शक्तियों को लेकर पैदा होता है । सामाजिक पर्यावरण में रहकर इन शक्तियों का विकास होता है। पर्यावरण में रहकर बालक अनेक क्रियायें करता है जिससे उसे नये अनुभव प्राप्त होते हैं। इन अनुभवों के अनुसार ही वह अपने व्यवहार में परिवर्तन तथा सुधार भी करता है । जिस बालक को जितने अधिक अनुभव प्राप्त होते है, उसका विकास भी उतना ही अधिक होता है। परिवर्तन व विकास की इस प्रक्रिया को ही शिक्षा कहा जाता है। बालक प्रेम, जिज्ञासा, कल्पना, आत्म—सम्मान आदि मूल प्रवृत्तियों को लेकर पैदा होता है। शिक्षा इन मूल प्रवृत्तियों का समुचित विकास करती है । शिक्षा के अभाव में ये प्रवृत्तियाँ अविकसित रहती है जिससे बालक के व्यक्तित्व का विकास संतुलित रूप में नहीं हो पाता। कुछ प्रवृत्तियाँ पाशविक होती है, शिक्षा इन प्रवृत्तियों पर नियंत्रण करना उनका मार्गान्तीकरण करना और सुधार करना सिखलाती है। जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिये व्यक्ति का शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक, सामाजिक, नैतिक विकास आवश्यक है। ज्ञान को विस्तृत करने और अपने दृष्टिकोण को विशाल बनाने के लिये मानसिक विकास आवश्यक है। शिक्षा इन सभी पक्षो का संतुलित विकास करती है। विद्यार्थियों की महत्त्वाकांक्षा एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा के स्तर पर भी अधिगम प्रक्रिया की सफलता काफी सीमा तक निर्भर करती है। अगर किसी विद्यार्थी में किसी भी प्रकार से आगे बढ़नें या उपलब्धि हासिल करने की कोई महत्त्वाकांक्षा या अभिप्रेरणा ही नहीं होगी तो वह किसी बात को सीखने की कोशिश भी नहीं करेगा। जो जितना पाने की इच्छा करता है. वह उसके लिये उतना ही प्रयत्न भी करना चाहेगा। जिनमें उपलब्धि की आवश्यकता सुदृढ होगी वे अपने आप में सुधार करने

का भी प्रयास करते है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व : शिक्षा सामाजिक शैली को प्रतिबिन्धित करती है। शिक्षा को जीवन से पृथक नहीं किया जा सकता। यदि प्रगति ही जीवन है तो शिक्षा इस प्रगति को उचित दिशा में नियंत्रित एवं संचालित करती है तथा बालक को उसके पर्यावरण के साथ समायोजन करना सिखाती है। यदि बालक में समायोजन करने की क्षमता नहीं होगी तो वह उसके व्यक्तित्व के विकास में बाधा उत्पन्न करेगी। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य बालक की कुशलता एवं दक्षता के मापन के आधार पर उन्हें उपलब्धि प्राप्त करने के समुचित अवसर प्रदान करना है। प्रत्येक बालक के जीवन की सफलता उनके मानसिक, सामाजिक, पारिवारिक, आर्थिक कारको आदि से प्रभावित होती है। यह सभी कारक बालक के जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उपलब्धि प्राप्त करने हेतु एक महत्वपूर्ण अभिप्रेरक का कार्य करते है। अतः अभिप्रेरणा का जीवन की सपूर्ण उपलब्धि के साथ घनिष्ट सम्बंध होता है । विद्यार्थियो के आत्म सम्प्रत्य एवं शैक्षिक उपलब्धि के सम्बन्ध का अध्ययन करना प्रस्तुत शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य है।

शोध समस्या कथन : "माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के आत्म सम्प्रत्यय एवं शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में एक अध्ययन''–

शोध अध्ययन के उदेश्य : –

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के आत्म सम्प्रत्यय का अध्ययन करना ।

2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना ।

शोध अध्ययन की परिकल्पनायें :–

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के आत्म सम्प्रत्यय में कोई सार्थक अन्तर नही है।

2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नही है ।

शोध अध्ययन विधि : प्रस्तुत शोध अध्ययन में सर्वेक्षण विधि के अन्तर्गत प्रतिदर्श विधि का प्रयोग किया गया है।

शोध अध्ययन की जनसंख्या एवं न्यादर्श – प्रस्तुत अध्ययन में मुरादाबाद जनपद के समस्त माध्यमिक शिक्षण संस्थाओं को जनसंख्या माना गया है। शोधकर्ता ने प्रस्तुत शोध कार्य के लिए न्यादर्श का आकार कुल जनसंख्या का 10 प्रतिशत रखने का निर्णय लिया है, जिसमें कुल 286 छात्र एवं छात्राओं को सम्मिलित किया गया है।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण :– प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकर्ताओं ने आर. के. सारस्वत द्वारा निर्मित आत्म सम्बोध प्रश्नावली का प्रयोग किया है ।

शोध अध्ययन का सीमांकन : प्रस्तुत अध्ययन की भी कुछ सीमाएं निश्चित की गई है, जो कि राज्य सरकार द्वारा संचालित मुरादाबाद जनपद के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के कक्षा 10 के विद्यार्थियों को चयनित किया गया है।

आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या :

परिकल्पना– 1. 'माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के आत्म सम्प्रत्यय में कोई सार्थक अन्तर नही है।' इस सम्बन्ध में निर्मित तालिका संख्या 1 प्रस्तुत है –

तालिका संख्या – 1

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के आत्म सम्प्रत्यय का विश्लेषण

परिगणित मूल्य	आत्म सम्प्रत्यय का विश्लेषण

	छात्र	छात्राऐं
विद्यार्थियों की संख्या	260	26
माध्य	133.00	132.87
प्रमाणिक विचलन	44.97	38.52
माध्य अन्तर	0.12	
प्रमाप विभ्रम	7.97	
क्रान्तिक अनुपात	0.01	
सारणी मूल्य (0.5 स्तर पर)	1.96	
सार्थकता	0.01<1.96 (निरर्थक)	
परिकल्पना	स्वीकृत	

तालिका स० 1 से स्पष्ट है कि छात्रों के औसत प्राप्ताकं 133.00 तथा छात्राओं के औसत प्राप्ताकं 132. 88 है। दोनों का माध्य अन्तर 0.12 है । माध्य अन्तर का प्रमाप विभ्रम 7.97 है। परिगणित क्रान्तिक अनुपात 0.01 है जो 5 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर निर्धारित सारणी मूल्य 1.96 से कम है। अतः अन्तर सार्थकता के 0.05 स्तर पर निरर्थक है। इस प्रकार शून्य परिकल्पना स्वीकृत हुई है कि "माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आत्म सम्प्रत्यय में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।'' तालिका संख्या 1 से ज्ञात होता है कि छात्रों एवं छात्राओं के आत्म–सम्प्रत्यय प्राप्तांकों के मध्यमान क्रमशः 133.00 एवं 132. 87 हैं तथा मानक विचलन क्रमशः 44.97 एवं 38.52 है । सांख्यिकीय विश्लेषण करने पर टी – मान 0.01 प्राप्त हुआ जो 5 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं है। इस आधार पर शून्य परिकल्पना छात्रों एवं छात्राओं के आत्म सम्प्रत्यय में कोई सार्थक अन्तर नहीं है, स्वीकार की जाती है। अर्थात दोनों मध्यमान सार्थक रुप से भिन्न नहीं है। मध्यमानों में जो भी अन्तर दिखाई देता है वह संयोगवश है।

परिकल्पना– 2. 'माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नही है।' इस सम्बन्ध में तालिका सं. 2 प्रस्तुत है –

तालिका संख्या – 2

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का विश्लेषण

परिगणित मूल्य	शैक्षिक उपलब्धि का विश्लेषण	
	छात्र	छात्राऐं
विद्यार्थियों की संख्या	260	26
माध्य	52.91	50.76
प्रमाणिक विचलन	7.28	7.05
माध्य अन्तर	2.15	
प्रमाप विभ्रम	1.46	
क्रान्तिक अनुपात	1.48	
सारणी मूल्य (0.5 स्तर पर)	1.96	
सार्थकता	1.48<1.97 (निरर्थक)	
परिकल्पना	स्वीकृत	

परिकल्पना परीक्षण के लिए छात्रों एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्धित प्राप्तांकों के माध्य अंक अलग–अलग ज्ञात करके उनका प्रमाप विचलन ज्ञात कर, प्रमाप विभ्रम के द्वारा क्रान्तिक अनुपात ज्ञात किया गया है। तालिका स. 2 से स्पष्ट है कि छात्रों एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्धित औसत प्राप्तांक क्रमशः 52.91 तथा 50.76 हैं तथा प्रमाप विचलन क्रमशः 7.28 एवं 7.05 है। दोनों मध्यमानों की तुलना करने पर टी – मान 1.48 प्राप्त हुआ जो कि सार्थकता के 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नही है।, स्वीकार की जाती है ।

शोध अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष :–

परिकल्पनाओं का परीक्षण करने के पश्चात निष्कर्ष प्राप्त होता है कि छात्र एवं छात्राओं के आत्म सम्प्रत्यय में कोई साथर्क अन्तर नहीं है। अर्थात छात्र एवं छात्राओं का आत्म सम्प्रत्य समान स्तर का पाया गया। छात्र एवं छात्राओं के आत्म सम्प्रत्यय सार्थक अन्तर नहीं है । अर्थात छात्र एवं छात्राओं के आत्म सम्प्रत्यय में कोई विशेष अन्तर नहीं है, जो भी अन्तर दृष्टिगोचर हो रहा है वह संयोगवश है। छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि छात्राओं की अपेक्षा अधिक उच्च है। छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में छात्राओं की अपेक्षा सकारात्मक प्रबलता है। छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि छात्राओं से अधिक सकारात्मकता लिये है।

– डॉ. राजकुमारी गोला
सहायक प्रोफेसर
शिक्षा विभाग
आईएफटीएम विश्वविद्यालय, मुरादाबाद

– कु. मोनिका शोधार्थिनी
शिक्षा विभाग
आईएफटीएम विश्वविद्यालय, मुरादाबाद
मोबा. 7668206043

संदर्भ ग्रंथ सूचीः–

- चौहान, आर एंव पी0डी0 (2015) अग्रवाल पब्लिकेशन्स आगरा–2 प्रथम संस्करण (2015–16) 98–102।
- डॉ माथुर, एस0एस0 (2011) शिक्षा के दार्शनिक तथा सामजिक आधार, अग्रवाल पब्लिकेशन्स आगरा–2।
- दीक्षित, एस0 (1989) शैक्षिक उपलब्धि पर व्यक्तित्व कारकों, बुद्धि एवं आत्म सम्प्रत्य का प्रभाव अप्रकाशित शोध प्रबंध मनोविज्ञान, आगरा विश्वविद्यालय, आगरा।
- वर्मा, पी0 एव श्रीवास्तव, डी0एन0 (2014) आधुनिक सामान्य मनोविज्ञान, आगरा पब्लिकेशन्स, सोलहवॉं संस्करण 216–223।
- शर्मा, आर0ए0 (2005) शिक्षा अनुसंधान, सूर्या पब्लिकेशन्स, आर. लाल बुक, डिपो, मेरठ संस्करण (2005), 29–32।
- सिंह ए0के0 (2013) उच्चतर सामन्य मनोविज्ञान, पटना विश्वविघालय पटना, षष्टम संस्करण (2013), पेज नं 142–145।
- Deshpande, M.B. (1984), An analytic study of cognitive affective development and scholastic achievement of tribal secondary school students. Unpublished Ph.D. thesis. Nagpur University. Nagpur.
- Montisi, M.R. (1979), A study of the self-concept of Basotho male and female adolescents in secondary schools. Dissertation Abstracts International, 39 (8).

मिडिल स्टेज पर अध्ययनरत सामान्य एवं विकलांग विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन का अध्ययन

– **डॉ. राजकुमारी गोला** (सहायक आचार्य)
– **उमरा इदरीस** (शोध छात्रा)

सार–सामान्य एवं विकलांग विद्यार्थियों के समायोजन से विद्यार्थियों के समूह पर नवीन प्रभाव पड़ता है। यदि समायोजन दोनों विद्यार्थियों में अच्छा होगा तो दोनों प्रकार सामान्य एवं विकलांग के विद्यार्थियों में शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ती है और आपस में समायोजन बनाकर अच्छी शिक्षा हासिल कर पाते हैं । इसी तरह शिक्षा के क्षेत्र में सामान्य एवं विकलांग विद्यार्थियों के समूह में आपस में अच्छा समायोजन बैठ पाता है जिससे उन्हें उनकी शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति हासिल करने के विभिन्न अवसर प्राप्त होते हैं। सामान्य एवं विकलांग विद्यार्थी आपस में समायोजन कर अपनी आकांक्षाओं को भी बढ़ा पाते हैं। और एक दूसरे के समूह में मिलकर अपना संपूर्ण विकास करते हैं। शैक्षिक समायोजन केवल शिक्षा के क्षेत्र में ही नहीं वह विद्यार्थी के संपूर्ण विकास जैसे शारीरिक विकास, मानसिक विकास व संवेगात्मक विकास जैसे विकास क्षेत्र में सामान्य एवं विकलांग विद्यार्थियों को सहायता प्रदान करती है इसी प्रकार सामान्य व विकलांग विद्यार्थी नवीन विशेषताओं को सीखने के लिए प्रेरित रहते हैं।

बीजक शब्द : शैक्षिक समायोजन, मानसिक, संवेगात्मक विकास, सामान्य एवं विकलांग विद्यार्थी।

प्रस्तावना : जैसा कि देखा जाता है कि यदि किसी मनुष्य को कोई भी चीज सीखनी या किसी भी विषय में ज्ञान प्राप्त करना होता है तो वह किताबी ज्ञान तक अपने आप को केंद्रित न करके अपने आसपास के वातावरण व लोगों से सीखे जिससे उनके सीखने में रुचि भी उत्पन्न होती है और साथ ही साथ किसी भी विषय को सीखने के लिए उसे आसानी हो जाती है। इसी प्रकार जब सामान्य एवं विकलांग विद्यार्थियों की शिक्षा की बात होती है यह प्रत्येक समूह अपने आप में विशेष प्रकार की विशेषताएं रखते हैं जो की शिक्षा को ग्रहण करने मैं अच्छा योगदान देती है । समायोजन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें कोई भी मनुष्य अपने आप को वातावरण के अनुसार समायोजित करने में अपने आप को सक्षम बनाता है । समायोजन करके कोई भी विद्यार्थी या कोई भी विद्यार्थियों का समूह अपने आप को नवीन विशेषताओं को अपने अंदर ग्रह करने व सिखाने के लिए तैयार करता है और वह उसी प्रकार अनुकूल परिस्थितियों में अपने आप को समायोजित करता है। इसी समायोजन को हम सामान्य व विकलांग विद्यार्थियों के समूह के अंतर्गत उनके शैक्षिक समायोजन पर ध्यान देते हैं तो हमें यह ज्ञात होता है कि दोनों वर्गों के विद्यार्थी चाहे वह विकलांग हो या सामान्य दोनों आपस में समायोजित होकर शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति करने के लिए सक्षम है और साथ ही साथ दोनों वर्गों के समूह आपस में मिलकर अपनी–अपनी विशेषताओं व ज्ञान एक दूसरे को स्थानांतरण भी करते हैं जिससे सामान्य विद्यार्थियों को विकलांग विद्यार्थियों से व विकलांग विद्यार्थियों को सामान्य विद्यार्थियों से कुछ न कुछ नया सीखने के अवसर प्राप्त होते हैं।

शोध अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व : प्रस्तुत शोध अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व बहुत ही महत्वपूर्ण है यदि कोई भी विद्यार्थी अपने जीवन में

सामाजिकता सीखने के लिए सबसे पहले विद्यालय में प्रवेश लेता है और विद्यालय ही एक ऐसा क्षेत्र माना जाता है जहां कोई भी विद्यार्थी अपने सहपाठियों के साथ मिलकर सामाजिकता को अच्छे से सीख पाता है। यदि सामान्य और विकलांग विद्यार्थी आपस में अच्छे से समायोजित होकर शिक्षा हासिल करते हैं तो वह खुद को नकारात्मक मानसिकता से दूर कर सकते हैं और शिक्षा के क्षेत्र में खुद की बहुत उन्नति कर सकते हैं, शैक्षिक समायोजन से दोनों प्रकार के विद्यार्थी एक दूसरे से नए–नए विषय के बारे में पढ़ने व सीखने के अवसर एक दूसरे को प्रदान करते हैं और एक दूसरे से अच्छे से समायोजित होकर शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति के मार्ग खोजते हैं जिससे यह निश्चित हो जाता है कि कोई भी विद्यार्थी आपस में समायोजित या समायोजन करके उन्नति के मार्ग को चुन सकता है जो कि अकेले वह किसी समूह में नहीं कर सकता। इसी प्रकार शैक्षिक समायोजन किसी भी विद्यार्थी को उसके शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ाने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है जिससे वह एक–दूसरे से नये–नये विषयों के बारे में जान पाएंगे और उन्हें आगे बढ़ाने के अवसर भी प्रदान कर पाएंगे।

शोध अध्ययन के उद्देश्य :–

1. सामान्य एवं विकलांग छात्रों के शैक्षिक समायोजन का अध्ययन करना।

2. सामान्य एवं विकलांग छात्राओं के शैक्षिक समायोजन का अध्ययन करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पनाऐं :–

1. सामान्य एवं विकलांग छात्रों के शैक्षिक समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है

2. सामान्य एवं विकलांग छात्राओं के शैक्षिक समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त विधि :– प्रस्तुत शोध अध्ययन की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

शोध अध्ययन का सीमांकन :

प्रस्तुत शोध अध्ययन में रामपुर जनपद के सरकार द्वारा सहायता प्राप्त एवं निजी मिडिल स्टेज के विद्यालयों में अध्यनरत कक्षा 8 के विकलांग तथा सामान्य विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या :–

परिकल्पना परीक्षण – 1. '"सामान्य एवं विकलांग छात्रों के शैक्षिक समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।" इस सम्बन्ध मे तालिका संख्या 1 प्रस्तुत हैं –

तालिका संख्या – 1

सामान्य एवं विकलांग छात्रों का शैक्षिक समायोजन

परिगणित मूल्य	छात्रों के प्राप्तांक	
	सामान्य	विकलांग
माध्य	22.36	20.41
प्रमाप विचलन	7.95	7.15
विद्यार्थियों की संख्या	430	170
माध्य अन्तर	1.95	
माध्य का प्रमाप विभ्रम	0.669	
टी–मूल्य	2.92	
सारणी मूल्य	1.96	
सर्थकता स्तर	0.05	
शून्य परिकल्पना	अस्वीकृत	

तालिका संख्या 1 से स्पष्ट होता है कि सामान्य विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन सम्बन्धी प्राप्तांकों का औसत 22.36 है जबकि विकलांग विद्यार्थियों का औसत 20.41 है दोनों का माध्य अन्तर 1.95 है। माध्य अन्तर का प्रमाप विभ्रम 0.669 है। परिगणित टी – अनुपात 2.92 है, जो कि 0.05 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर सारणी मूल्य 1.96 से अधिक है। अतः अन्तर सार्थक है शून्य परिकल्पना अस्वीकृत हुई है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि सामान्य एवं विकलांग विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन में अन्तर है दोनों समूहों के माध्यमों की तुलना करने से स्पष्ट होता है कि सामान्य विद्यार्थियों का शैक्षिक समायोजन विकलांग विद्यार्थियों की तुलना में श्रेष्ठ है क्योंकि इस समूह का माध्य विकलांग समूह

की तुलना में 1.96 अंक अधिक है।

परिकल्पना परीक्षण – 2 : सामान्य एवं विकलांग छात्राओं के शैक्षिक समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।" इस सम्बन्ध मे तालिका संख्या 2 प्रस्तुत की गई है –

तालिका संख्या – 2

सामान्य एवं विकलांग छात्राओं का शैक्षिक समायोजन

परिगणित मूल्य	छात्राओं के प्राप्तांक	
	सामान्य	विकलांग
माध्य	21.54	20.65
प्रमाप विचलन	7.91	7.93
विद्यार्थियों की संख्या	228	113
माध्य अन्तर	0.89	
माध्य का प्रमाप विभ्रम	0.91	
टी–मूल्य	0.98	
सारणी मूल्य	1.96	
सर्थकता स्तर	0.05	
शून्य परिकल्पना	स्वीकृत	

तालिका संख्या 2 से स्पष्ट है कि सामान्य छात्राओं के औसत प्राप्तांक 21.54 तथा विकलांग छात्राओं के औसत प्राप्तांक 20.65 है । दोनों का माध्य अन्तर 0.89 है। माध्य अन्तर का प्रमाप विभ्रम 0.91 है परिगणित टी– अनुपात 0.98 है जो कि 0.05 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर सारणी मूल्य 1.96 से कम है। अतः अन्तर निरर्थक है। शून्य परिकल्पना स्वीकृत हुई है । निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि सामान्य एवं विकलांग छात्राओं के शैक्षिक समायोजन में अन्तर नहीं है। दूसरे शब्दों में, सामान्य एवं विकलांग छात्राओं का शैक्षिक समायोजन एक समान है।

शोध अध्ययन के निष्कर्ष की व्याख्या : प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु निर्धारित परिकल्पनाओं के परीक्षण के आधार पर पाया गया है कि सामान्य एवं विकलांग छात्राओं के शैक्षिक समायोजन में कोई अन्तर नहीं पाया जाता है। वही सामान्य एवं विकलांग छात्राओं शैक्षिक समायोजन में अन्तर पाया गया है । अतः प्रस्तुत शोध से हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि यदि सामान्य एवं विकलांग विद्यार्थियों को समायोजित करके एक साथ शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ाया जाए तो वे शिक्षा के क्षेत्र में अधिक से अधिक उन्नति कर सकते हैं और उनकी आकांक्षाएं भी एक दूसरे से सीख कर बढ़ सकती है तथा जो अन्तर पाया गया है उसे कम किया जा सकता है।

– **डॉ. राजकुमारी गोला**
सहायक प्रोफेसर
शिक्षा विभाग
आईएफटीएम विश्वविद्यालय, मुरादाबाद

– **उमरा इदरीस** शोध छात्रा
शिक्षा विभाग
आईएफटीएम विश्विद्यालय, मुरादाबाद
मोबा 7017774936

संदर्भ :

- अरोड़ा, रीता (2005); "शिक्षा में नव चिन्तन", जयपुरः शिक्षा प्रकाशन।
- अग्निहोत्री, रविन्द्र (2007); "आधुनिक भारतीय शिक्षा समस्याऐं एवं समाधान", जयपुरः राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
- भट्टाचार्य, जी0सी0 (2005); "अध्यापक शिक्षा", आगराः विनोद पुस्तक मन्दिर।
- दुबे, श्यामाचरण (2005); "भारतीय समाज", दिल्लीः नेशनल बुक ट्रस्ट इण्डिया, पृष्ठ–126।
- लाल एवं पलोड़ (2007); "शैक्षिक चिन्तन एवं प्रयोग", मेरठः आर0 लाल बुक डिपा।
- प्रसाद, देवी (2001); "शिक्षा का वाहनः कला", दिल्लीः नेशनल बुक ट्रस्ट इण्डिया, पृष्ठ–68,।
- पाण्डेय, राम शुक्ल (2007); "शैक्षिक नियोजन एवं वित्त प्रबन्धन", आगराः विनोद पुस्तक मन्दिर, पृष्ठ–105, 115, 116, 124।
- शर्मा, रजनी एवं पाण्डेय, एस0पी0 (2005); "शिक्षा एवं भारतीय समाज", तयपुरः शिक्षा प्रकाशन, पृष्ठ 128–129।
- सुखिया, एस0पी0 (2005); "विद्यालय प्रशासन एवं संगठन", मेरठः आर0 लाल बुक डिपो।

जंगें आज़ादी में उर्दू कलमकारों का हिस्सा

– डॉ. मो. अज़हर ढ़ेरीवाला

हिन्दुस्तान की जंगे आजादी में उर्दू कलमकारों की वतन परस्ती की ओर अपना जज्बा बेहिसाब है। वतन की महक उसकी खुश्बू और कुरबानी की मिशाल इन कलमकारों ने पेश की है, और वतन परस्ती की ऐसी कुरबानी, मिशाल हमें और जबानों में देखने को नहीं मिलती। उर्दू जबान का कलमकार अपने में वतन की मुहब्बते और उससे उल्फत के नगमें गाता हुआ नजर आता है। इन कलाकारों में अल्लामा इकबाल, फैज अहमद फैज, अकबर इलाहाबादी, हसरत मुहानी, सरवरजहाँ आबादी, कैफी आजमी काफी लम्बी फेहरिस्त है। इस ओर अल्लामा इकबाल का वतनपरस्ती का जज्बा अपने आप में बेमिशाल है। उन्होंने तो अपने वतन से मोहब्बत में यह कह दिया –

सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा
हम बुलबुलें हैं इस की ये गुलसिताँ हमारा
मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना
हिन्दी हैं हम वतन है हिन्दोस्ताँ हमारा
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी
सदियों रहा है दुश्मन दौर–ए–ज़माँ हमारा

इस और कलमकार पंडित बृज नारायण चकबस्त की शायरी में भी वतनपरस्ती का जज्बा देखने को मिलता है । चकबस्त ने तफरेका परस्ती से दूर जाकर वतन में रहने वाले लोगों से हमदर्दी उल्फत और कुर्बानी के जज्बे को पेश करने की कोशिश की है।

चकबस्त का कहना है कि –

अकबर ने जामे उल्फत बक्सा इस अंजुमन को,
सींचा लहू से अपने राणा ने इस चमन को।

इन दिनों अपने वतन से मोहब्बत करना जुर्म माना जाता था वतन अंग्रेजों को गुलामी की जंजीरों से जकड़ा हुआ था इन हालातों का जिक्र करता हुआ शायर कहता है –

जो आजकल है मोहब्बत वतन की आलमगीर,
यही गुनाह है, यही जुर्म है, यही तकदीर है,
जुबा ए बंद कलाम को पहनाई है जंजीर,
बयाने दर्द की बाकी नहीं कोई तस्वीर,
है दिल में दर्द मगर ताकत कलम नहीं,
लगे हैं जख्म तड़पने का इंतजाम नहीं

चकबस्त

वतन से हमदर्दी का जजबा और उस वक्त हालात जो दर्द बनकर उभर रहे थे। वही दर्द फैज़ अहमद फैज़ की नज़्म में उभरकर सामने आया है। फैज की शायरी का रिश्ता अपने वतन से आशिक और मेहबूब का रहा है। जहाँ शायर आशिक है और उसका वतन मेहबूत है। उनकी वतनपरस्ती और हमदर्दी का जजबा उनकी शायरी में इस तरह पेश हुआ है –

निशार मैं तेरी गलियों पे ऐ वतन कि जहाँ,
चाली है रश्म कि कोई सर उठा के न चले,
जो कोई चाहने वाला तवाफ़ को निकले,
नज़र चुराले चले, जिस्म–व– जॉ बचा के चले।

फैज़

ऐसे संगीन हालात में चकबस्त ने अपने वतन के लोगों में आज़ादी का जो ज़ज़्बा पैदा किया है वह बेमिसाल है –

"अगर पड़े रहे गफलत में की नींद में सरसार,
तो जेरे मोज़ फ़ना होगा आबरू का मज़ार,

मिलेगी कौम ये बतेरा तमाम दुबेगा।,
जहाँ भीष्म, अर्जुन नाम दुबेगा।''

चकबस्त

बुलबुल को गुल मुबारक, गुल को चमन मुबारक,
हम बेकसों को अपना, प्यारा वतन मुबारक,
गुन्चें हमारे दिल के, इस बाग में खिलेंगें।
इस खाक से उठेगें, इस खाल में मिलेंगे।

चकबस्त

''लहलहाता है मुहब्बत का तेरे दिल में चमन,
माँ के दामन से है बढ़कर हमें, तेरा दामन,
तेरी तस्वीर से है कौम की आँखें रौशन,
तेरे बालों की सफेदी है के सुबह वतन,
दिल पर दर्द की तशवीर है सुरत तेरी,
ताज़ काँटों
का है पहने हुए, मूरत तेरी।''

चकबस्त

इस ओर अकबर इलाहाबादी का भी अपने वतन से उल्फत का जज्बा कम नहीं है उनकी शायरी में एक ओर गुस्सा है तो दूसरी ओर मुहब्बत।ये गुस्सा देश के दुश्मनों के खिलाफ उभरकर सामने आया है. वे कहते हैं–

हम आह भी करते है तो हो जाते हैं बदनाम
वो कत्ल भी करते हैं तो चर्चा नहीं होता।

अंग्रेजो के खिलाफ अपने गुस्से का इज़हार करते हुए वे कह उठते हैं कि

आह जो दिल से निकाली जाएंगी
क्या समझते हो की खाली जाएंगी।

अकबर इलाहाबाद

इश्वा भी है शोख़ी भी तबस्सुम भी हया भी
ज़ालिम में और इक बात है इस सब के सिवा भी

अकबर इलाहाबादी

सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है,
देखना है जोर कितना बाजु–ए–कातिल में है

रामप्रसाद बिस्मिल

वतन की ख़ाक से मर कर भी हम को उन्स बाक़ी है
मज़ा दामान–ए–मादर का है इस मिट्टी के दामन में
छुप नहीं सकती छुपाने से मोहब्बत की नज़र
पड़ ही जाती है रुख़–ए–यार पे हसरत की नज़र

हसरत मोहानी

सरवरजहाँ आबादी

सबूत क्या, तुझे अपने वतन परस्ती का ए ज़ालिम
पानी न मिले तो वज़ू भी इसी मिट्टी से करते हैं

कैकी आज़मी

बस्ती में अपनी
हिन्दू–मुस्लिम जो बस गए
इंसा की शक्ल देखने को हम तरस गए।
कर चले हम फिदा जानो – तन साथियों
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियों

कैफी आज़मी

अली सरदार जाफरी–

तीरगी के बादल से
जुगनुओं की बारिश से
रक्स में शरारे हैं
हर तरफ अँधेरा है
और इस अँधेरे में
हर तरफ शरारे हैं
कोई कह नहीं सकता
कौनसा शरारा कब
बेकरार हो जाये
शोलबार हो जाये
इन्कलाब आ जाये

इस तरह इन कवियों ने अपने वतन से मोहब्बत का इजहार अपनी शायरी के ज़रिए किया है।

– डॉ. मोहम्मद अज़हर ढ़ेरीवाला
बी/2, विक्रम बाग कॉलोनी, प्रतापगंज,
वडोदरा–390002 (गुजरात)
मोबा./वाट्सअप नं. 7096055731

दलित उत्पीड़न और धर्मांतरण का सटीक आख्यान है : दिल्ली की गद्दी पर खुसरो भंगी

– विवेक कुमार

संकेत शब्द :

वर्ण, जाति, पात्र–अपात्र, दलित– चेतना, दलित उत्पीड़न, धर्म, दलित नाटक, भंगी शब्द का अर्थ, इतिहास, खिलजी सल्तनत, मुबारक शाह, पसमांदा मुसलमान, गाजी मलिक, भंते, श्रमण संस्कृति, धर्मांतरण।

सारांश

जाति आज भी भारत का कटु यथार्थ है। और संविधान में अनुसूचित जाति/जनजाति अत्याचार निवारण अधिनियम का प्रावधान दलित उत्पीड़न का यथार्थ है तथा हर वर्ष का नेशनल क्राइम ब्यूरो रिकॉर्ड इस कटु सत्य का जीवंत साक्ष्य है। इसके साथ ही जाति के नाम पर उत्पीड़न, अपमान, मानवीय अधिकार हनन और उसके कारण भारतीय में मध्य काल से लेकर आज तक अनुसूचित जाति एवं जनजाति के लोगों का मुस्लिम या ईसाई धर्म ग्रहण करना भी उतना ही बड़ा सत्य है। डॉ माता प्रसाद द्वारा विरचित नाटक 'दिल्ली की गद्दी पर खुसरो भंगी' इस कटु यथार्थ का सटीक नाट्य आख्यान है।

जाति की कुव्यवस्था ने दलितों के सारे मानवीय अधिकार छीन लिए। सभी योग्यताओं और स्पर्धाओ से उन्हें बाहर कर दिया। न सार्वजनिक समारोहों में शामिल हो सकते थे, न सार्वजनिक स्थलों पर आ–जा सकते थे और न प्राकृतिक जलाशयों से पानी भर सकते थे। वे ही दलित जब धर्मांतरण कर इस्लाम स्वीकार कर लेते हैं तो छुआछूत और प्रगति मार्ग की बांधाओं से पार पा लेते हैं। तथाकथित शूद्रातिशूद्र भंगी जैसी अछूत जाति में जन्मा खुसरो, उसके बंधु–बांधव और ऐसी ही अन्य अछूत जातियों के सदस्य जाति उत्पीड़न से छुटकारा पाने के लिए इस्लाम स्वीकार कर लेते हैं। वहां जाति की वो जकड़न और वर्जनाएं नहीं हैं । खुसरो और उनके कई साथी मुबारक शाह की फौज में भर्ती हो जाते हैं। खुसरो अपनी योग्यता के बलबूते दिल्ली की गद्दी पर बैठ जाता है, जिसकी हिंदू धर्म में रहते हुए कल्पना भी नहीं की जा सकती।

माता प्रसाद जी अपनी इस लघु नाटिका के नायक खुसरो का हिंदू नाम खुशाल रखते हैं। खुसरो का हिंदू अछूत होना नाटककार की महज कल्पना नहीं, अपितु नव जागरण काल के एक बड़े विद्वान संतराम बी.ए. ने अपनी पुस्तक 'हमारा समाज' में पृष्ठ 207 पर, खुसरो का जिक्र किया है, जिसे काठियावाड़ का अछूत बताया गया है। हिंदुओं की भेदभाव की नीति के विरोध में उसने इस्लाम धर्म ग्रहण कर लिया और फौज में भर्ती होकर अलाउद्दीन खिलजी के पुत्र मुबारक शाह का विश्वासपात्र बन गया।'[1]

सन् 1250 में काठियावाड़ के एक गांव का दृश्य है। वहां एक चीवरधारी श्रमण आता है, जिसका सिर घुटा हुआ है। गले में एक गेरूए रंग का थैला लटक रहा है। दोपहर का समय है। वह एक झोंपड़ेनुमा मकान के दरवाजे पर वहां उपस्थित एक अर्द्ध नग्न युवक से पीने के लिए पानी मांगता है। साथ खड़ी एक स्त्री जो उस युवक की मां है, कहती है–स्त्री 'भगवन क्या आप हमारा छुआ हुआ पानी पीएंगे ? हम लोग अछूत जाति के भंगी हैं। हिंदू लोग हमारी परछाईं से भी बचते हैं।'

श्रमणः माता जी आप मुझे शीघ्र पानी पिलाइए। मैं पानी पीऊंगा, भंगी नहीं। हम लोग मनुष्यों द्वारा बनाई गई भेदभाव की जाति व्यवस्था को नहीं मानते।[2]

श्रमण इतिहास के झरोखे से उसे भंगी व अन्य दलित जातियों के सही इतिहास का दर्शन करवाता है। आर्यों–अनार्यों के संघर्ष का वर्णन करते हुए बताता है कि बाहर से आए आर्यो ने 'मूलनिवासियों को विजित कर उनके साथ क्रूरतापूर्ण व्यवहार किया। उनकी जर,

जोरू और जमीन छीन ली। वे मूलनिवासियों के साथ वर्णव्यवस्था के नाम पर रंगभेद करते थे। वे मद्यपान (सोमरस) करने वाले और सूअर, लोमड़ी, हरिण, खरगोश आदि को पकड़ कर जलती हुई आग में जिंदा जलाकर उनका मांस खाने वाले थे। यहां के मूलनिवासियों को उनका यह व्यवहार पसंद नहीं था। विजित होने के बाद भी वे पशु बलि और मद्यपान के विरुद्ध थे और इन कृत्यों का घोर विरोध करते थे।'[3]

वे खुशाल को और विस्तार से समझाते हैं।

श्रमणः यहां के मूल निवासी उनके कृत्यों का विरोध करते थे। जो मूलनिवासी आर्यों की इस व्यवस्था का कड़ा विरोध करते थे, उन्हें व्यवस्था भंग का दोषी मानकर उनको अधिक प्रताड़ित किया जाता था। उनको व्यवस्था भंग करने वाला यानी भंगी कहकर अपमानित करने के उद्देश्य से सभी गंदे काम करने को विवश किया गया।[4]

खुशाल अपने पिता की मृत्यु के बाद जाति का चौधरी बनाया जाता है। वे जाति बंधुओं के बच्चों के लिए स्कूल की व्यवस्था की बात करते हैं। वे अपने जाति बंधुओं और अन्य दलित जातियों के सदस्यों के सामूहिक मंदिर प्रवेश आंदोलन का नेतृत्व करते हैं। पुजारी अखिलानंद के भड़काने पर सवर्ण लोग हथियारों के साथ आंदोलनकारियों पर टूट पड़ते हैं, जिसमें वे खुशाल सहित सभी घायल हो जाते हैं और सगरा नामक दलित शहीद हो जाता है। खुशाल चौधरी हिंदुओं को इस मौत का मजा चखाने के लिए धर्म परिवर्तन के लिए उन्हें संकल्पित करते हैं।

प्रथम अंक के दृश्य पांच में दलित आंदोलनकारी हिंदू धर्म के खिलाफ बगावत करने और उसे छोड़कर अन्य धर्म में जाने के लिए जेठा भाई के दरवाजे पर इकट्ठा हो जाते हैं। दयाभाई जैसराम लिखित क्रांतिकारी गीत सुनाता है।

दयाभाई : 'कहते हिंदू धर्म सभी का फिर भी अछूत कहलाते हैं हम ही उनके पेट को भरते, हम ही कुचले जाते हैं ऐसे धर्म में आग लगा दो जहां न मान हमारा हो समता का व्यवहार जहां हो, ऐसा धर्म हमारा हो।'[5]

अगले दृश्य छः में पुजारी अखिलानंद के दरवाजे पर भीड़ जुटती है। भगन यह खबर देते हुए अफसोस जताता है कि आंदोलनकारी दलितों ने इस्लाम कबूल कर लिया है। उन्होंने अपने नाम बदल लिए हैं।

मुबारक शाह फौज की एक टुकड़ी के साथ दक्षिण में देवगिरी पर चढ़ाई कर देता है और खुसरो को अपने साथ ले जाता है। खुसरो बादशाह की हिफाजत करने के लिए रुक जाता है। और देवगिरी के एक हमलावर युवक द्वारा बादशाह की हत्या की कोशिश नाकाम करते हुए तलवार के एक वार से ही उसे ढेर कर देता है। बादशाह खुश होकर उसे दिल्ली और महल की हिफाजत की जिम्मेदारी सौंप देता है।

नायब सिपहसालार बहाउद्दीन खां बादशाह मुबारक शाह को देवगिरी की फतह, वहां के शासक कर्ण राव की मौत और उसके खजाने की लूट की खुशखबरी देता है। मुबारक शाह खुसरो को सभी युद्ध बंदियों को तलवार के बल पर इस्लाम कबूल करवाने और मंदिरों को तुड़वा कर उन पर मस्जिदें बनाने की जिम्मेदारी देता है, जिससे खुसरो सादर असहमति जताता है। इससे नाखुश मुबारक शाह कहता है–

मुबारक : 'इस्लाम की वजह से ही तुम इस हैसियत में पहुंचे हो, नहीं तो भंगी बनकर कहीं गंदी गालियों में गंदगी साफ करते नजर आते। मैं तुम्हें इस ओहदे से बर्खास्त करता हूं।[6] खुसरो (बादशाह की तलवार छीनकर) मुबारक तुम हद से बढ़ गये हो। मुझे भंगी के नाम पर अपमानित कर रहे हो। मुझे यह बर्दाश्त नहीं। तुम तो मुझे गद्दी से बर्खास्त करना चाहते हो, लेकिन, मैं तुम्हें दुनिया से ही बर्खास्त किए देता हूं। (तलवार से मुबारक का गला काट देता है)'[7]

खुसरो ऐसे समय पर बड़ी कूटनीति से काम लेता है। अपने पांचों भरोसेमंद दोस्तों अमजद, करीम आदि को कहता है कि मुबारक की मौत की खबर बाहर न जाए। आखिर नौ दिन बाद खुसरो की ताजपोशी हो जाती है। इस दिन वजीरे आजम करमतुल्लाह बादशाह खुसरो की तरफ से कुछ ऐसी बातों पर अमल करने की इतला देते हैं, जो आम अवाम के अमन चैन और

खुशहाली के लिए जरूरी हैं।

लेकिन, बहुत दुखद और आश्चर्य की बात है कि उच्च जाति के जिन हिंदुओं ने सत्ता में भागीदारी के लिए या तलवार के भय से इस्लाम स्वीकार किया था, उन्होंने जातिवाद के कुसंस्कार का संक्रमण वहां भी फैला दिया था। निम्न जातियों (पसमांदा तबकों) को देखते ही उनका पुराना जातीय दंभ का नाग फुत्कार मारने लगा। इस्लाम में धर्मांतरित उच्च जाति के हिंदुओं में सैयद, शेख, पठान आदि के रूप में अपनी पहचान बनाई। खुसरो का सत्ता के शीर्ष पर जाना या तो तुर्कों को अखरा या सैयद, शेख, पठानों को। खुसरो द्वारा पसमांदा तबकों के लिए कल्याणकारी कार्यक्रम की घोषणा उन्होंने अपने मान–सम्मान के लिए खतरा माना। मुहम्मद उमर के शब्दों में–

'उसने पसमांदा कौमों को बढ़ावा देकर मुसलमानों में बंटवारे का बीज बो दिया है।'[8]

ये वो ही कुतर्क हैं, जो आरक्षण के विरुद्ध सवर्ण लोग देते आए हैं। वे बादशाह खुसरो के विरुद्ध षड्यंत्र रचने लगे। उन्हें गलत ढंग से इस्लाम का दुश्मन प्रचारित करने लगे।

जब गुल्लु (एक फकीरनुमा आदमी जो खुसरो का भरोसेमंद साथी है) आकर बादशाह को षड्यंत्र की सूचना देता है तो खुसरो कहता है–

'क्या कहूं गुल्लू, इस मुल्क में इस्लाम की महावत (बराबरी) को जानकर यहां की अछूत पिछड़ी कौमें इस्लाम में आकर इज्जत महसूस कर रही थी। लेकिन, हिंदुओं के जिन ब्राह्मण, ठाकुरों ने इस्लाम को अपनाया वे ही इस्लाम में शेख, सैयद, पठान हो गए। हिंदू काल की बड़प्पन की गलत फहमी अभी भी उनमें कायम है।... मेरी पहले की जाति के कारण अगड़ी जाति का मुसलमान मुझे हजम नहीं कर पा रहा। इसलिए मेरे विरोध की बात चल रही है। फिर भी, मैं इहकी परवाह न करके जब तक इस ओहदे पर हूं गरीबों की खिदमत से दूर नहीं भागूंगा।'[9]

और अंततः इन षड्यंत्रकारी गाजी मलिक के साथ मिलकर खुसरो की हत्या करने में कामयाब हो जाते हैं।

सारांशत : यह नाटक ऐतिहासिक तथ्यों के साथ उच्च जातियों की तथाकथित वीरता, योग्यता और श्रेष्ठता का भ्रम तोड़कर मनुष्य मात्र की नैसर्गिक समता को प्रमाणित करता है। यह नाटक यथास्थितिवादी क्रूर ताकतों द्वारा दलितों के उत्पीड़न और उनके द्वारा धर्मांतरण का तार्किक व तथ्यात्मक आख्यान है।

– **विवेक कुमार**
475, लाज विला, फेज–1,
सेक्टर–1, हुडा नारनौल, (हरियाणा)

संदर्भ :

1. संतराम बी.ए., हमारा समाज, नालंदा पब्लिकेशन कंपनी, रेसकोर्स रोड, वडोदरा, प्रथम संस्करण, 1971, पृष्ठ 207, वही, पृष्ठ 6
2. दिल्ली की गद्दी पर खुसरो भंगी, माता प्रसाद, सम्यक प्रकाशन, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण 2014, पृष्ठ 13
3. वहीं, पृष्ठ 16
4. वही, पृष्ठ 17
5. वही, प्रथम अंक, पांचवां दृश्य, पृष्ठ 30
6. वही, अंक चार, पृष्ठ 46
7. वही, पृष्ठ 46
8. वही, अंक तीन, पृष्ठ 57
9. वही, पृष्ठ 60

दलित कविता : सामाजिक न्याय और अधिकार की पुकार

(शोध आलेख)

– डॉ. श्यौराजसिंह बेचैन
(सीनियर प्रो. हिन्दी विभाग, डी.यू.)

नवें दशक में दलितों, वचिंतों और अदिवासियों के साहित्य की सर्वाधिक बात की आचार्य (डॉ.) पुरुषोत्तम सत्यप्रेमी ने। डॉ. सत्यप्रेमी के कार्यों को उनके जीवन काल में ही मान्यता मिल चुकी थी। आदिवासी उपायुक्त आर. सी. वट ने उन्हें दिनांक 28–7–1997 को बाकायदा प्रमाण पत्र दिया था–'डॉ. पुरूषोत्तम सत्यप्रेमी दलित समाज सेवी साहित्यिक संस्थाओं के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन और दलितोत्थान के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य विगत अनेक वर्षों से कर रहे हैं।'[1] डॉ. प्रेमी ने

साहित्य को नारेबाजी और विचार धाराओं के वादों और विवादों से परे रख कर रचना में रचाव क्या चीज है? कितना है, कैसा है ? साहित्य की साहित्यिकता क्या है? रस की, छंद की आवश्यकता क्या है और साहित्य में उसकी उपस्थिति कैसी है? क्या छंद की अनिवार्यता काव्यात्मक अभिव्यक्ति को कलावादी पंडितों के लिए आरक्षित करती है। क्या साहित्य का लोकतंत्र छंदों के बंधनों से मुक्ति में सन्निहित हैं?

छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद की पृष्ठभूमि पर आज का कौन सा साहित्य यथार्थवाद में सामाजिक विसंगतियों का खुलासा कर रहा है? जिस 'अस्मिता – विमर्श' और 'अस्मितावादी साहित्य' की बात आज विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में की जाती है, आचार्य सत्यप्रेमी ने सत्तर के दशक में इसकी नींव रख दी थी। उत्तर–प्रदेश में इस दिशा में डॉ. एन. सिंह ने भी रचनात्मक कोशिश की थी। 1990 तक तो सत्यप्रेमी के **'द्वार पर दस्तक'** और **'मूक माटी की मुखरता'** संग्रह प्रकाशित हो चुके थे। पंजाबी के दलित कवि बलबीर माधोपुरी का तो आज 2024 में 'माटी बोल पड़ी' उपन्यास प्रकाशित हुआ है। जो मूक माटी की मुखरता का पर्याय ही है। बेशक विषय वस्तु में मध्य–प्रदेश और पंजाब की पृथक पृष्ठभूमियां हैं, परन्तु सरोकार है। और संबंद्धता अवश्य एक है। इसलिए कि भारत के हर कौने हर प्रदेश और हर भाषा में दलित उपेक्षा, अपमान और बहिष्कार कायम है।

डॉ. सत्यप्रेमी के साहित्यिक रूझान में 'साहित्य लालित्य' के प्रति गहरा लगाव था। जिसे मात्र प्रतिरोध को मूल्य व सौंदर्य मानने वाले कतिपय दलित साहित्यकार गैर जरूरी मानते थे। डॉ. सत्यप्रेमी ने बहुत से लेखकों को एक मंच पर लाने के उद्देश्य से 'डॉ. अम्बेडकर राष्ट्रीय अस्मिता दर्शी साहित्य अकादमी एवं भारती दलित साहित्य अकादमी मध्यप्रदेश की स्थापना की। तत्कालीन लोक सेवा आयुक्त मध्य–प्रदेश इन्दौर (2–8–97) के अनुसार–'उन्होंने एक अकादमी की स्थापना की। जिसमें समाज में असमानता की विभीषिका से उद्वेलित समस्त सृजन कर्मियों को एक सूत्र में पिरोने का उन्होंने प्रयास किया। उनकी पुस्तकें **'मुक माटी की मुखरता'** (कविताएं) तथा **'दलित साहित्य और सामाजिक न्याय'** उल्लेखनीय हैं।[2]

डॉ. पुरूषोत्तम सत्यप्रेमी के मन में साहित्य भाव, साहित्य से लगाव आरम्भ से ही था। यह भाव और लगाव उन्हें राष्ट्रकवि डॉ. शिवमंगलसिंह 'सुमन' के सानिध्य में खींच कर ले गया, उनके निर्देशन में डॉ. सत्यप्रेमी ने ललित साहित्य के प्रकाण्ड पंडित डॉ. विद्यानिवास मिश्र के साहित्य का अनुशीलन करने को प्रेरित किया। उनका पीएच. डी. के लिए शोध–शीर्षक था **'आधुनिक हिन्दी निबन्ध साहित्य में ललित निबन्ध की संकल्पना और डॉ. विद्या निवास मिश्र के निबन्धों का अनुशीलन'** उसी दशक में नैमिशराय जैसे दलित लेखक मिश्रजी के बतौर संपादक व्यावहारिक शुद्धतावाद से काफी आहत हुए थे।

डॉ. विद्यानिवास मिश्र के निबंधों का जैसा सारगर्भित सुन्दर मूल्यांकन डॉ. पुरूषोत्तम सत्यप्रेमी ने किया। उसी तरह प्रेमी जी के साहित्य का भी समुचित मूल्यांकन किया गया–'चन्द्रकांत देवताले के शब्दों में षकिसी कवि का संसार वही होता है जिसमें जीते और संघर्ष करते हुए वह अपनी वेदना और इच्छाओं के लिए रचनात्मक भाषा का आविष्कार करते हुए एक बेहतर दुनिया का सपना देखता हैं। 'मूक माटी की मुखरता' की ताजा कविताओं में प्रख्यात कवि डॉ. पुरूषोत्तम सत्यप्रेमी को अपनी पिछली कविताओं की जमीन और मुहावरे को बहुत पीछे छोड़ एक अधिक प्रासंगिक जमीन और जीवंत अनुभवों की सार्थक भाषा के समीप ला कर खड़ा करती है। यह एक सुखद अहसास है। ये कविताएं उन लोगों की यातना और आकांक्षाओं की विश्वसनीय अभिव्यक्ति हैं जो सदियों से दलित–शोषित की कतार में रहे, और आज भी जिन्हें बतौर सीढ़ी इस्तेमाल किया जा रहा है, किन्तु इन कविताओं में शिकस्त का शोक न होकर अस्मिता और हकदारी की ऐसी व्यग्रता है जो मराठी दलित कविता में खुददारी के साथ पाई जाती है।[3]

सत्यप्रेमी ने कविता, निबंध आलोचना आदि अनेक

विधाओं में लिखा डॉ. वेद प्रकाश अमिताभ के अनुसार– ''डॉ. सत्यप्रेमी के आलेख संकेत करते हैं कि हिन्दी साहित्य में दलित चेतना का रूप स्पष्ट और मुखर होता जा रहा हैं। यह रूप आधुनिक भारतीय दलित साहित्य के बोध के मेल में है। वे दलित साहित्य को जिस भीतरी–बाहरी स्तर पर सक्रिय सामाजिक सम्बद्धता का साहित्य मानते हैं, वह आधुनिक हिन्दी साहित्य के एक बड़े हिस्से में मौजूद हैं। दलित समाज में परिवर्तन की जिज्ञासा पैदा करने, उन्हें, प्रश्नाकुल बनाने तथा परिवर्तन प्रमाण से अवगत कराने का उद्देश्य लेकर इस प्रकार का साहित्य रचा गया है। आपने कई लेखों में दलित साहित्य को 'अंत्योदयी' की संज्ञा भी दी है। उन्होंने अपने कई लेखों में अंत्योदयी साहित्य के लिखे जाने के प्रमाण जुटाए हैं। ऐसे अवसरों पर उनकी शोधवृत्ति और आलोचना शक्ति दोनों का निर्वाह ठीक से हुआ हैं।[4]

यदि हम साहित्य संवेदना को लेकर अपनी दृष्टि को थोड़ा और चौड़ा करें सांसारिक सरोकारों की बात करें तो कहना होगा कि 'कविता तो एक विधा है।' साहित्य में तो कहानी, उपन्यास, संस्मरण, यात्रा वृतांत आत्मकथा आदि सभी विधाएं आती हैं। कुल मिला कर साहित्य की भूमिका व्यापक हो जाती है।

दुनिया के किसी भी देश का साहित्य मनुष्य के व्यवहार को नियंत्रित करने विचारों को संयत रखने के लिए बाध्यकारी नहीं है। उसी तरह दलित साहित्य भी सामाजिक अभिव्यक्ति भर है। वह कोई बाध्यकारी कानून नहीं है। वह न केवल संपूर्ण भारतीय साहित्य में प्रतिपक्ष है, अपितु सोच और संस्कृति में भी प्रतिपक्ष ही है। साहित्य की सत्ता में उसकी पक्षधरता स्वेच्छया स्वीकार–नकार पर निर्भर है। विविधता की विवशता मानव मूल्यों की नैतिकता और सांसारिक भेदभावों से ऊपर उठ कर मानवता के प्रति कर्तव्यनिष्ठता यदि कोई सर्वाधिक बोध कराने वाली विधा है तो वह कविता है। लेखक–संपादक कोई कालजयी रचना दे जाए वह काफी नहीं होता। बड़ा प्रदेय होता है चेतना के बीज रोपण, जिससे नए सरोकारी लेखक पैदा होते हैं।

नवें दशक की इन कविताओं पर बात कर ही रहा था कि मेरी दृष्टि एक खबर पर पड़ी–'कवि के घर चोरी का पछतावा, सब वापस रख गए चोर' (अमर उजाला, 17–07–2024) चित्र देख कर मैं खबर के भीतर गया। ये उन्हीं कवि नारायण सुर्वे का घर था जिसमें चोरी कर चोर पछताए और टीवी सेट सहित सब सामान वापस रख गए। यह नोट लिख कर कि 'हमें खेद है कवि के घर में चोरी की।' 1996 में पहली बार दिल्ली के ग्रीन पार्क में मराठी के कवि नारायण सुर्वे ठहरे हुए थे स्मरण नहीं कि माध्यम कौन था? मैं जेएनयू से कवि सुर्वे के पास गया था। लम्बी वार्ता हुई, डायरी में उनके अनुभव दर्ज किए, उन्होंने अपना संग्रह 'नारायण सुर्वे की कविता' जिसका मराठी से हिन्दी में अनुवाद किया था, प्रो. पांडुरंग कापडणीस ने, भेंट किया। उसे पढ़ा और उसी समय समीक्षा भी की, आज सत्ताइस–अठाइस साल बाद उक्त प्रसंग काव्य चमत्कार की भांति मेरे समक्ष उपस्थित हुआ। तब मैंने उनका संग्रह उठाया सो आप कवि सुर्वे की कविता देखें–

''कलकत्ते की राहों में घोड़ा बन मेरी –
आत्मा 'बग्गी' खींचती थी।
लेकिन इतना काफी,
अब हमें, धूमिल
चश्में बदल लेने होंगे ।
हम भी इसी सदी में पैदा हुए
हमें भी हिसाब चुकते करने होंगे।'[5]

कवि को उस्ताद से मिली हिदायत का स्मरण है–
'एक बात का ख्याल रखना बेटा,
सबद लिखना बड़ा आसान है
सबद खातिर जीना मुश्किल है।
मैं खटिक हूँ बेटा, मगर
गाभिन गाय कभी नहीं काटता ।

यह हमारा मार्क्सबाबा
'जर्मनी' में जन्म लिया, बोरा भर ग्रंथ लिखे

और इंग्लैंड में की मिट्टी में समा गया।"[6]

यहां हम जिस समय विशेष की बात कर रहे हैं, उस समय कंवल भारती ने 'डॉ. आम्बेडकर की कविताएं शीर्षक से दस्तावेजी साहित्य प्रकाशित किया । जिसे राजेन्द्र यादव को समर्पित किया ।

ऐसे समय में जब गरीब को अछूत से भी आगे रखा जा रहा है, बाकायदा 'ईडब्ल्यूएस' नाम से दस फीसद आरक्षण जिन्हें दिया जाता है, उनके प्रमाण पत्र पर ही लिखा जाता है 'यह प्रमाण पत्र 'एससी' एसटी और 'ओबीसी' के लिए नहीं है।' और मजेदार बात यह कि 12 लाख मासिक आय वाले ये सछूत (सवर्ण) तथाकथित गरीब से पचास गुना अधिक गरीब हो, ऊपर से अछूत व पिछड़ा भी हो तब भी वह न तो गरीब होने का प्रमाण पत्र पा सकता है और न ईडब्ल्यूएस श्रेणी में आरक्षण पा सकता है। पर कविता में संविधान–निर्माता, सामाजिक न्याय के चौम्पियन डॉ. अम्बेडकर जो कहते हैं उसे चिन्हित संयोजित कर प्रस्तुत किया कंवल भारती ने–

अछूत

गरीब होना बुरा है / पर उतना बुरा नहीं / जितना
कि अछूत होना
गरीब स्वाभिमानी हो सकता है / किन्तु अछूत नहीं हो सकता।
निम्न होना बुरा है / पर उतना बुरा नहीं
जितना कि अछूत होना /
निम्न व्यक्ति ऊपर उठ सकता है
किन्तु अछूत नहीं उठ सकता।
दुःखी होना बुरा है / पर उतना बुरा नहीं / जितना कि अछूत होना
दब्बू दबंग हो सकता है / यदि जन्म जात नहीं है
किन्तु अछूत उसकी आशा नहीं कर सकता।[7]

यह बताने की आवश्यकता नहीं कि अस्पृश्य का दर्जा क्या है। गरीबी निम्नता, दुखी दब्बूपना, ये चीजें बदली जा सकती हैं, बदली जा चुकी हैं। अस्पृश्यता पहाड़ की चट्टान की भांति समाज में खड़ी है। संविधान माझी की तरह नियमों कानूनों के हथौड़े बजा रहा है ताकि भावी संततियों के लिए समता स्वतंत्रता का रास्ता प्रशस्त हो सके ।

– डॉ. श्यौराजसिंह बेचैन
सेक्टर–1, भवन संख्या
1/122, वसुंधरा, गाजियाबाद–201012 (उ.प्र.)
मोबा. 97183 71808

संदर्भ :

1. दयाशंकर सुबोध – बहुआयामी व्यक्तित्व एवं कृतित्व के धनी सत्यप्रेमी – प्रकाशक, प्रांतीय महासचिव भारतीय दलित साहित्य अकादमी, आश्वस्त, 20 बागपुर, सांवेर रोड़ उज्जैन, पृ. 22, 1997.
2. वही.
3. डॉ. चन्द्रकांत देवताले – फ्लैप – मूक माटी की मुखरता – दलित सहित्य – म.प्र., प्रकाशन सन 1997.
4. डॉ. वेद प्रकाश अमिताभ – साप्ताहिक नागसेन सोमवंशी – चन्द्रपुर – 13 जनवरी 1997.
5. नारायण सुर्वे की कविता, बहर प्रकाशन – 893, सदाशिव पेठ, पुणे (महाराष्ट्र), पृ. 68, 1995.
6. नारायण सुर्वे की कविता, बहर प्रकाशन – 893, सदाशिव पेठ, पुणे (महाराष्ट्र), पृ. 68, 1995.
7. कंवल भारती–'डॉ. अम्बेडकर की कविताएं पृ. 11 – बोधिसत्व प्रकाशन, सिविल लाइन्स रामपुर, संस्करण – 1996.

स्वाधीनता आंदोलन और खड़ी बोली हिन्दी का साहित्य

– देवचंद्र भारती
शोधार्थी

डॉ. दुर्गेश कुमार राय
शोध निदेशक

शोध सारांश

पराधीन भारत में ब्रिटिश शासन से मुक्ति पाने के लिए भारतीय साहित्यकारों ने स्वाधीनता आंदोलन में अपना साहित्यिक योगदान दिया। साहित्यकारों ने खड़ी बोली हिंदी में साहित्य–सृजन करके भारतीय जनता में जागृति और स्वदेश प्रेम का भाव उत्पन्न किया। कविता, कहानी, नाटक तथा उपन्यास आदि विधाओं के माध्यम से हिंदी साहित्यकारों ने स्वाधीनता आंदोलन में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। अनेक साहित्यकारों ने

साहित्य सृजन के अतिरिक्त स्वयं स्वाधीनता आंदोलन में प्रतिभाग भी किया तथा वे अंग्रेजी प्रशासन द्वारा बंदी भी बनाये गये, किंतु उन्होंने अपनी क्रांति की राह नहीं छोड़ी। हिंदी साहित्यकारों द्वारा निरंतर साहित्यिक प्रयास के कारण भारत के जवानों ने अंग्रेजी शासन का कड़ा विरोध किया तथा अंग्रेजों को भारत छोड़ने के लिए विवश कर दिया ।

बीज शब्द

स्वाधीनता, खड़ी बोली, हिंदी साहित्य, राष्ट्रीय चेतना, स्वतंत्रता संघर्ष, सांस्कृतिक जागरण, अंग्रेजी शासन, देशप्रेम।

मूल आलेख –

स्वाधीनता, आधुनिक काल का एक प्रमुख राजनैतिक दर्शन है। स्वाधीनता, वह स्थिति है, जिसमें किसी राष्ट्र, देश या राज्य द्वारा अपनी इच्छा के अनुसार कार्य करने पर किसी दूसरे राष्ट्र, देश या राज्य का किसी भी प्रकार का कोई प्रतिबंध नहीं होता। अर्थात् स्वाधीन राष्ट्र अथवा देश के नागरिक स्वशासन से शासित होते हैं। स्वाधीनता ही आत्मनिर्भरता को जन्म देती है। तथागत गौतम बुद्ध की वाणी 'अत्त दीपो भव' मनुष्य स्वाधीनता का बोध कराती है। स्वाधीनता का विलोम शब्द 'पराधीनता' है। पराधीनता के बारे में महान संतकवि रविदास ने कहा है 'पराधीनता पाप है/जान लेहु रे मीत, रविदास दास पराधीन सो/कौन करे है प्रीत।' इसी प्रकार भक्तकवि तुलसीदास ने 'पराधीन सपनेहु सुख नाहीं' कहकर पराधीनता में मिलने वाले दुखों का संकेत किया है। आधुनिक भारत के महान विचारक डॉ. भीमराव आंबेडकर के शब्दों में, 'स्वाधीनता पर आपत्ति करने का अर्थ है, दासता को शाश्वत बनाना, क्योंकि दासता का अर्थ केवल कानूनी अधीनीकरण या परतंत्रता नहीं है। इसका अर्थ है, समाज में व्याप्त वह स्थिति, जिसमें कुछ लोगों को विवश होकर अन्य लोगों से उन प्रयोजनों को भी स्वीकार करना होता है, जिनके अनुसार उन्हें आचरण करना है। यह स्थिति तब भी रह सकती है, जब कानूनी अर्थ में दासता का अस्तित्व न हो ।"[1] पराधीनता ही मनुष्य को दासता के बंधन में बंधने के लिए विवश करती है ।

भारतवर्ष की पराधीनता का इतिहास प्राचीन काल से आरंभ होकर आधुनिक काल तक समाप्त होता है। प्राचीन काल में, थोड़े समय के लिए ही सही, किंतु सिकंदर ने अपने आक्रमण के द्वारा भारतवासियों को पराधीनता का अनुभव करा दिया था। मध्यकाल में, मुसलमान शासकों ने कई सौ वर्षों तक भारत पर शासन किया और भारतवासियों को पराधीन बनाये रखा। सन् 1757 ई. से लेकर सन् 1758 ई. तक भारत ईस्ट इंडिया कंपनी के अधीन रहा। सन् 1857 ई. की क्रांति के बाद सन् 1858 ई. से भारत में ब्रिटिश शासन लागू हो गया। ब्रिटिश शासन के दौरान भारत के अनेक साहित्यकार, समाजसेवी और राजनेता जागरूक होकर अपनी स्वाधीनता के लिए आंदोलन शुरू किये। भारत के स्वाधीनता आंदोलन में राजनेताओं, देशभक्तों, समाजसेवियों आदि के अतिरिक्त साहित्यकारों की महत्वपूर्ण भूमिका रही। विशेष रूप से, हिंदी भाषा के साहित्यकारों ने अपने प्रेरक साहित्य के माध्यम से भारत के युवाओं में देशभक्ति की भावना का संचार किया।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (9 सितंबर 1850, 6 जनवरी 1885) ने अपनी कविताओं, नाटकों एवं निबन्धों के द्वारा अंग्रेजी शासन के कारण होने वाली भारत की दुर्दशा का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया तथा भारतवासियों को अपनी भाषा की उन्नति और स्वदेशी वस्तुओं का उपयोग करने की शिक्षा दी ।अपने नाटक 'अंधेर नगरी' में उन्होंने 'अंधेर नगरी चौपट राजा' का संवाद प्रस्तुत करके तत्कालीन अंग्रेजी शासकों पर तीखा व्यंग्य किया। इसी प्रकार भारतेंदु जी ने अपने निबंध 'भारतवर्षोन्नति कैसे हो सकती है?' में भारतवर्ष की उन्नति के लिए अनेक उपाय सुझाये, जो तार्किक और वैज्ञानिक हैं। भारत की दुर्दशा भारतेंदु हरिश्चंद्र से देखी नहीं जाती थी। उन्होंने अपने नाटक 'भारत–दुर्दशा' में लिखा है–

रोअहु सब मिलिकै आवहु भारत भाई !
हा हा! भारत दुर्दशा न देखी जाई ।[2]

द्विवेदीयुगीन कवि नाथूराम शर्मा 'शंकर' (1859 –1932) का नाम राष्ट्रीय चेतना के कवियों में अग्रगण्य है । उनके विपुल रचनासंसार में पराधीन राष्ट्र की वेदना, समाज में व्याप्त पाखंड, अंधविश्वास, कदाचार और विधवाओं की दीन–हीन दशा आदि की उपस्थिति मार्मिक चित्रण है। 'शंकर' जी की कविताओं में तत्कालीन ब्रिटिश शासन से छुटकारा पाने की टीस, उपदेश तथा संदेश सभी पाये जाते हैं। साथ ही, वे बच्चों, बड़ों, बूढ़ों और महिलाओं को प्रेरणा देते हुये भी दिखाई देते हैं। उनकी कविताओं में वह विविधता, लालित्य, छन्द, अंलकार और बिम्बों का अनुपम प्रयोग मिलता है, जिसे पढ़कर पाठक उसी में खो जाता है। स्वाधीनता के लिए अपने प्राणों का बलिदान करने की प्रेरणा देते हुए नाथूराम शर्मा 'शंकर' ने लिखा है–

देशभक्त वीरों! मरने से नेक नहीं डरना होगा।
प्राणों का बलिदान देश की वेदी पर करना होगा।।[3]

स्वामी अछूतानन्द 'हरिहर' (6 मई 1879 20 जुलाई 1933) क्रांतिकारी चेतना का प्रसार करने वाले साहित्यकार तथा समाज सुधारक थे। उनकी रचनाओं में वंचित वर्ग की पीड़ा, राष्ट्रीयता की भावना को समेटे हुए दिखाई देती है। यदि 'वंचित' शब्द का व्यापक अर्थ ग्रहण किया जाए, तो अंग्रेजी शासन में सभी भारतवासी 'वंचित' थे। अंग्रेजों द्वारा उन्हें स्वाधीनता से वंचित रखा गया था, समानता से वंचित रखा गया था, न्याय से वंचित रखा गया था। भारतवासियों को गुलामी की जंजीरे तोड़ने के लिए आह्वान करते हुए स्वामी अछूतानंद 'हरिहर' ने लिखा है

अब तो नहीं है वह जमाना, जुल्म 'हरिहर' मत सहो।
अब तो तोड़ दो जंजीर, जकड़े क्यों गुलामी में रहो।।[4]

द्विवेदी युगीन साहित्यकार गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही' (21 अगस्त 1883 20 मई 1972) ने 'सनेही' उपनाम से कोमल भावनाओं की कविताएँ, 'त्रिशूल' उपनाम से राष्ट्रीय कविताएँ तथा 'तरंगी' एवं 'अलमस्त' उपनाम से हास्य–व्यंग्य की कविताएँ लिखीं। राष्ट्रीय अस्मिता के प्रखर समर्थक 'सनेही' जी की सुदीर्घ और एकनिष्ठ काव्य–साधना राष्ट्र को समर्पित रही है। उनकी छन्द–बन्ध से युक्त कविता 'स्वदेश' जन–जन की जिह्वा पर आद्यन्त विराजमान रही है ।

जो भरा नहीं है भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं ।
वह हृदय नहीं है, पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं ।।[5]

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में स्पष्ट है कि स्वाधीनता आंदोलन में खड़ी बोली हिंदी साहित्य की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। हिंदी साहित्यकारों ने न केवल राष्ट्रीय चेतना का साहित्य लिखा है, बल्कि उन्होंने स्वाधीनता आंदोलन में सक्रिय रूप से भागीदारी भी की है। रामनरेश त्रिपाठी, माखनलाल चतुर्वेदी आदि साहित्यकार तो स्वाधीनता आंदोलन के लिए जेल भी गये थे । स्वाधीनता आंदोलन में सक्रिय साहित्यकारों ने व्यक्तिगत रूप से जो अनुभव किया, उसे उन्होंने अपने साहित्य में भी अभिव्यक्ति दी। खड़ी बोली हिंदी के साहित्यकारों ने अंग्रेजी शासन में भारत की दुर्दशा, भारतवासियों की पीड़ा, अंग्रेजों की निर्दयता, विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार, सामाजिक, सांस्कृतिक, राष्ट्रीय और राजनैतिक जागरूकता आदि को अपने साहित्य का विषय बनाया है। केवल कविताओं में ही नहीं, बल्कि कहानी, निबंध, नाटक और उपन्यास आदि सभी विधाओं में हिंदी साहित्यकारों ने स्वाधीनता आंदोलन हेतु प्रेरक साहित्य का सृजन किया है। हिंदी निबंधकारों में बालकृष्ण भट्ट, भारतेंदु हरिश्चंद्र, प्रताप नारायण मिश्र, रामवृक्ष बेनीपुरी, सरदार पूर्ण सिंह आदि ने अपने राष्ट्रीय चेतना से परिपूर्ण निबंधों द्वारा स्वाधीनता आंदोलन में वैचारिक योगदान दिया। नाटककारों में भारतेंदु और प्रसाद के अतिरिक्त हरिकृष्ण प्रेमी, उदयशंकर भट्ट, लक्ष्मीनारायण मिश्र, डॉ. रामकुमार वर्मा और सेठ गोविंद दास आदि ने अपने नाटकों से स्वाधीनता आंदोलन को बल प्रदान किया। हिंदी कहानीकारों में प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद, मोहन राकेश, अमरकांत आदि तथा उपन्यासकारों में प्रेमचंद के अतिरिक्त यशपाल, धर्मवीर भारती आदि के साहित्य में

राष्ट्रीय चेतना सन्निहित है । खड़ी बोली हिंदी साहित्य के श्रवण और पाठन से पराधीन भारत की जनता स्वाधीनता के प्रति जागरूक हुई, जिसके परिणामस्वरूप भारतीय स्वाधीनता आंदोलन को सफलता मिली ।

– **देवचंद्र भारती** शोधार्थी,
हिंदी विभाग, के.जी. के. (पी.जी.) कॉलेज,
मुरादाबाद महात्मा ज्योतिबा फुले
रोहिलखंड विश्वविद्यालय, बरेली–232108 (उ.प्र.)
मोबा. 9454199538

संदर्भ :

1. बाबा साहेब डॉ. आंबेडकर संपूर्ण वांग्मय खंड 1, भारत में जातिप्रथा एवं जातिप्रथा उन्मूलन, पृष्ठ 67, डॉ. आंबेडकर प्रतिष्ठान नई दिल्ली, बारहवाँ संस्करण 2019
2. भारत दुर्दशा भारतेंदु हरिश्चंद्र, संपादक लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय, पृष्ठ 22, विश्वविद्यालय प्रकाशन गोरखपुर, प्रथम संस्करण 1953
3. हिंदी साहित्य का नवीन इतिहास रू डॉ. लाल साहब सिंह, पृष्ठ 127, विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी, पंचम संस्करण 2011
4. सिद्धार्थ रामू का लेख, वेबपेज – hindi.theprint.in पद, 6 मई 2019
5. गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही' नरेश चंद्र चतुर्वेदी, पृष्ठ 44, साहित्य अकादमी नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण 1990

दिव्यांगजनों के लिए ई–सेवाओं की उपयोगिता

– डॉ. संतोष पाटीदार

प्रस्तावना

केंद्र और राज्य दोनों ही सरकारों का यह कानूनी उत्तरदायित्व है कि वे यह अभिनिर्धारित करे कि डिजिटल सेवा प्रदाता चैनलों में वैश्विक डिजाइन को ही अपनाया जाए ताकि दिव्यांगजनों सहित सभी व्यक्तियों को समान पहुंच का अवसर प्राप्त हो सके। डिजिटल इंडिया कार्यक्रम के भीतर ई–सेवाओं से अधिक उम्र की वजह से चुनौतीपूर्ण क्षमताओं वाले वरिष्ठ नागरिक एवं अधिक सहारे की आवश्यकताओं वाले दिव्यांग व्यक्तियों सहित प्रत्येक दिव्यांगजन अधिकार सम्पन्न बनेंगे।

भारत जैसे–जैसे डिजिटाइजेशन की दिशा में निरंतर आगे बढ़ रहा है और जिस प्रकार से देश में डिजिटल क्रांतिया हो रहीं है, वैसे–वैसे दिव्यांगजनों के तौर तरीकों में बुनियादी परिवर्तन देखने को मिल रहे है। सरकारी एवं निजी दोनों ही संगठन अपनी कार्यशैली प्रणाली में परिवर्तन ला रहे है ताकि डिजिटल समाधानों के तहत दिव्यांगजनों तक आसानी से पहुंचा जा सके। एक राष्ट्र के रूप में हमें यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि देश का प्रत्येक दिव्यांग डिजिटल क्रांति से आए इस परिवर्तन का लाभार्थी बने। डिजिटल क्रांति ने जहां समस्त नागरिकों के लिए उत्पाद और सेवाएं प्राप्त करना आसान बना दिया है, वही इसने दिव्यांगजनों को भी उनकी गतिशीलता संबंधी एवं कई अक्षमताओं के बावजूद विभिन्न उत्पाद और सेवाएं आसानी से प्राप्त करने के लिए अधिकार सम्पन्न बना दिया है।

दिव्यांगजन वैब पोर्टल, मोबाइल एप्लिकेशन एवं क्योस्क जैसे विभिन्न सूचना और संचार प्रौद्योगिकी का उपयोग करते है। ऐसे दिव्यांग जो दृष्टिहीन है स्क्रीन रीडर का उपयोग कर सकते है, जो विंडोज, एम. एस, माइक्रोसॉफ्ट ऑफिस एवं गूगल क्रोम जैसे आपरेटिंग सिस्टम का श्रव्य आउटपूट उपलब्ध कराता है। 'आवाज' एक उपकरण है जो वैकल्पिक और संवर्धनात्मक संचार युक्ति है। इसका उपयोग प्रमस्तिष्क घात, स्वपरायणता, मानसिक मंदता एवं बोलने में असमर्थ आदि से गसित व्यक्ति कर सकते हैं। बाद में इस आईपैड और एंड्राइड टेबलेट के एक ऐप के रूप में बदल दिया गया है। आज ऐसे ऐप्स आ गये है जिनका उपयोग दिव्यांगजन व्यापक रूप से करने लगे है, जैसे आईफोन या एंड्राइड फोन के माध्यम से ओला टैक्सी बुक कर सकते है, मोबाइल ऐप के माध्यम से भोजन की होम डिलीवरी सेवा का लाभ उठा सकते है, ई–कामर्स वेबसाइट के माध्यम से घर बैठे किसी भी स्थान से ऑनलाइन खरीददारी कर सकते है आदि। इस प्रकार ई–सेवाओं से गतिशीलता में अवरोध की समस्या से निपटने में उन्हें मदद मिली है।

ई–सेवाओं से दिव्यांगजना को वित्तीय कामकाज में भी मदद मिली हैं। इससे पहले दृष्टि बाधित व्यक्तियों को बैंक में लेनदेन करते वक्त हस्ताक्षरों में विभिन्नता के कारण कई प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता था। लेकिन वर्तमान समय में डिजिटल क्रांति ने इस प्रकार की समस्याओं को काफी हद तक हल कर दिया है। अब बैंकों में चैक आधारित लेन–देन की बजाय वैब पोर्टल या मोबाइल ऐप के माध्यम से दिव्यांगजन ऑनलाइन लेन–देन कर सकते है और इस प्रकार बैंकिंग लेनदेन की प्रक्रिया पर उनका पूर्ण नियंत्रण रहता है। दिव्यांगजन बिना जोखिम उठायें बैंकिग व्यवहार आसानी से कर सकते है।

दिव्यांगजनों के लिए यात्रा करते समय मोबाइल के माध्यम से समाचार पत्र पढ़ना एवं समाचार सुनना अब कोई सपना नहीं रहा, बल्कि वे इसका बढ़–चढ़ कर उपयोग कर रहे हैं। वे सेवा प्रदाता प्रणाली के बारे में सरकारी एवं निजी उद्यमियों को जानकारी देकर इसमें सुधार के लिए भी कह सकते है। सेवा प्रदाता प्रणाली के इस डिजिटल चैनल ने दिव्यांगजनों को घर बैठे अपनी शिकायतों के बारे में अवगत कराने की सुविधा प्रदान कर दी हैं। दिव्यांगजन अपने मोबाइल ऐप के माध्यम से मनोरंजन की सुविधाओं का फायदा भी उठा सकते है, क्योंकि इस तरह की मनोरंजन सामग्री ऐप का अभिन्न अंग होती है और मददगार प्रौद्योगिकी के माध्यम से इन तक आसानी से पहुंचा जा सकता हैं।

भारत सरकार ने यह सुनिश्चित करने की कई पहल की है कि सेवा प्रदाता प्रणाली का डिजिटल चैनल दिव्यांगजनों सहित सभी व्यक्तियों के लिए समान रूप से सबकी पहुंच के दायरे में रहे। इलैक्ट्रानिक माध्यम से आयकर का भुगतान जैसे, ई–फाइलिंग, भारतीय रेलवे खानपान एवं पर्यटन निगम (आईआरसीटीसी) एवं इलेक्ट्रॉनिक और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय आदि समावेशन की दिशा में सरकार की सफलता का अच्छा उदाहरण है और इनकी सेवाओं का फायदा आमतौर पर दिव्यांगजनों के लिए भी आसानी से उपलबध हैं। सुगम्यता के माध्यम से दिव्यांगजनों के समावेशन को प्रोत्साहित करने तथा उन्हें बाधा मुक्त वातावरण उपलब्ध करवाने के उद्देश्य से भारत सरकार ने 3 दिसम्बर 2015 का दिव्यांगजनों हेतु अंतर्राष्ट्रीय दिवस के अवसर पर 'सुगम्य भारत अभियान का शुभारम्भ किया। यह सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय के निःशक्तता मामले विभाग के तहत एक राष्ट्रव्यापी अभियान है, जो कि देशभर में दिव्यांगजनों को सार्वभौमिक पहुंच, विकास हेतु समान अवसर, स्वतंत्र आजीविका तथा एक समावेशी समाज में जीवन के सभी पक्षों में भागीदारी उपलब्ध कराने के उद्देश्य से प्रारंभ किया गया है।

डेजी फोरम ऑफ इण्डिया देश में लाभ के उद्देश्य से कार्य न करने वाले संगठनों का एक ऐसा मंच है जो दिव्यांगजनों की मदद करता है, जो दृष्टि संबंधी या अन्य अक्षमताओं के कारण सामान्य रूप से मुद्रित पुस्तकें नहीं पढ़ सकते हैं। यह संगठन, दिव्यांगजनों के लिए ऐसे प्रारूप में पुस्तकें और अन्य पढने संबंधी सामग्री उपलब्ध कराता है, जो ये आसानी से पढ़ सकते है! डेजी फोरम ऑफ इण्डिया ने भारत सरकार के सहयाग से वर्ष 2016 में एक ऑनलाइन मंच 'सुगम्य पुस्तकालय' की शुरूआत की है, जहां दिव्यांगजन इंटरनेट के माध्यम से पुस्तकालय से संबंधित सभी पकार की पुस्तकों को पढ़ सकते है। सुगम्य पुस्तकालय में दृष्टिहीन व्यक्ति भी अपनी पसंद के किसी भी उपकरण जैस मोबाइल फोन, टैबलेट एवं कम्प्यूटर आदि का उपयोग कर ब्रेल डिस्पले की मदद से पुस्तकें पढ़ सकते हैं।

स्मार्ट सिटी मिशन स्थानीय विकास को सक्षम करने और प्रौद्योगिकी की मदद से नागरिकों के लिए बेहतर परिणामों के माध्यम से जीवन की गुणवत्ता में सुधार करने तथा आर्थिक विकास को गति देने हेतु शहरी विकास मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा एक अभिनव एवं एक नई पहल हैं। स्मार्ट सिटी मिशन में सम्मिलित सभी शहरों को यह सुनिश्चित करना अनिवार्य होगा कि सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी डिजिटल रूप में सबके लिए उपलब्ध रहे ताकि

दिव्यांगजन सहित सभी नागरिकों को सरकारी सेवाओं का समान रूप से फायदा प्राप्त हो सके।

दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम, 2016 के लागू होने के बाद डिजिटल इण्डिया के दायरे में अपने वाली समस्त सरकारी ई–सेवाओं के लिए अंतर्राष्ट्रीय मापदण्डों का अनुपालन करना जरूरी हो गया हैं। इस अधिनियम के अंतर्गत सरकार यह सुनिश्चित करने के लिए उपाय करेगी कि श्रवण, प्रिंट और इलैक्ट्रानिक मीडिया में उपलब्ध सभी सामग्री पहुंच के दायरे में हो। सब लोग इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का फायदा उठा सके, इसके लिए श्रवण वर्णन, सांकेतिक भाषा, निर्वचन एवं निकट शीर्षक (कैप्शनिंग) जैसी सुविधाए हो तथा प्रतिदिन उपयोग की इलेक्ट्रॉनिक वस्तुएं दुनियाभर में एक जैसे डिजाइन में उपलब्ध हो।[1]

डिजिटल पहुंच का मतलब दिव्यांगजनों के लिए एक ऐसा अनुकूल माहौल बनाने से है जिससे कम्प्यूटर, सॉफ्टवेयर, इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों एवं संचार साधनों तक आसानी से पहुंच में मदद मिल सके ताकि उन्हें सशक्त बनाया जा सके और राष्ट्र की मुख्य धारा से जोड़ा जा सके। उत्पादों, माहौल, कार्यक्रम और सेवाओं के डिजाइन को आयु, लिंग, स्थिति या दिव्यांगता का भेद किये बिना उपयोग करने वाले सभी लोगों के अनुकूल बनाया जाना चाहिए जिससे व आसानी से उनका उपयोग कर सके और अधिकार सम्पन्न बन सके।

– **डॉ. संतोष पाटीदार**
सहायक प्राध्यापक
चमेली देवी इंस्टिट्यूट ऑफ लॉ,
इंदौर–452020 (म.प्र.) मोबा. 98267 75780

संदर्भ ग्रंथ सूची
1 दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम, 2016 की धार –42

वेबसाइट
sarvprathamnews-com
www-jagran-com
www-bhaskar-com
www-naidunia-com
www-india-gov-in

हम लड़ रहे हैं

– डॉ. खन्ना प्रसाद अमीन

हम लड रहे हैं
असमानता के विरुद्ध
बंदूकों से नहीं मगर,
कलम और कागज से

हम लड रहे हैं
अपनी जमीन के लिए
जो बसायी थी अपने पुरखों ने
सख्त मेहनत से
जो छिन ली है सेठ और साहूकारों ने

हम लड रहे हैं
इन्सानियत के वजूद के लिए
वे फँसा रहे हैं हमें
गुलामी की जंजीरों में

हम लड रहे हैं
रोटी, कपड़ा और मकान के लिए
वे उलझाते हैं हमें
हिन्दू, मुस्लिम और पाकिस्तान में

हम लड रहे हैं
शिक्षा के अधिकारों के लिए
वे उलझाते हैं हमें
धर्मशास्त्र के भ्रमजाल में
ताकि सुशिक्षित न कर सकें
कल आने वाली नयी पीढ़ी को .....

40, शुभम् बंगलोज के पास, जोगणी माता रोड
बाकरोल–388315 जिला आणंद (गुजरात)
98249 56974

मध्यप्रदेश शासन
देश की आज़ादी के लिए प्राणों की आहुति देने वाले
वीर शहीदों को कृतज्ञतापूर्ण नमन
रानी लक्ष्मीबाई
चन्द्रशेखर आजाद
वीर सुरेन्द्र साए
भीमा नायक
शंकर शाह
रघुनाथ शाह
बरकतउल्ला भोपाली
रानी अवंतीबाई
टंट्या भील
तात्या टोपे
राणा बख्तावर सिंह
सीताराम कँवर
रघुनाथ सिंह मण्डलोई
नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री
78 वें स्वतंत्रता दिवस की
हार्दिक शुभकामनाएं
चौतरफा विकास का
परचम लहराता मध्यप्रदेश
युवाओं के लिये गुणवत्तापूर्ण शिक्षा एवं व्यावसायिक क्षमता निर्माण के लिए सभी 55 जिलों में पी.एम. कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस प्रारंभ
मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की पहल पर प्रदेश में पहली बार रीजनल इंडस्ट्री कॉन्क्लेव हो रहे आयोजित
संबल योजना, प्रधानमंत्री आवास योजना, सामाजिक सुरक्षा पेंशन, आहार अनुदान योजना एवं राशन आपके ग्राम जैसी योजनाओं के माध्यम से गरीब और जरूरतमंदों को सहायता
मुख्यमंत्री लाड़ली बहना योजना में 1.29 करोड़ महिलाओं को रक्षाबंधन पर प्रतिमाह ₹1250 के अतिरिक्त ₹250 का विशेष उपहार, अब तक ₹22 हजार 924 करोड़ की सहायता, लाड़ली लक्ष्मी योजना के माध्यम से बेटियों की शिक्षा और स्वास्थ्य का ख्याल
मुख्यमंत्री किसान कल्याण योजना में 83 लाख से अधिक किसानों को ₹14254 करोड़ की सहायता
डॉ. मोहन यादव
मुख्यमंत्री
मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव से जुड़ने के लिए स्कैन करें
@Cmmadhyapradesh
@jansampark.madhyapradesh
@Cmmadhyapradesh
@jansamparkMP
JansamparkMP
मध्यप्रदेश शासन
मध्यप्रदेश जनसम्पर्क द्वारा जारी
D18008/24
आकल्पन : म.प्र. माध्यम/2024

डॉ. पुरुषोत्तम सत्यप्रेमी जी
की
बीसवीं पुण्यतिथि
(07/08/24)
पर आश्वस्त परिवार की ओर से
विनम्र श्रद्धांजलि

पंजीयन संख्या
RNI No. MPHIN/2002/9510

डाक पंजीकृत क्रमांक मालवा डिवीजन/204/2024-2026 उज्जैन (म.प्र.)

प्रतिष्ठा में ,

पत्र व्यवहार का पता :
20, बागपुरा, सांवेर रोड,
उज्जैन 456 010 (म.प्र.)

प्रकाशक, मुद्रक **पिंकी सत्यप्रेमी** ने भारती दलित साहित्य अकादमी की ओर से
मालवा ग्राफिक्स, 29, वररुचि मार्ग, गुरुद्वारे के सामने, फ्रीगंज, उज्जैन फोन : 0734-4000030 से मुदित एवं
20, बागपुरा, सांवेर रोड, उज्जैन 456 010 (म.प्र.) फोन : 0734-2518379 से प्रकाशित।

सम्पादक : डॉ. तारा परमार